Pradeep

Vishakha

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 112920

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/07/1988	जन्म तिथि	10/12/1992
शनिवार	दिन	गुरुवार
घंटे 21:00:00	जन्म समय	08:25:00 घंटे
घटी 38:23:56	जन्म समय(घटी)	04:21:31 घटी
India	देश	India
Nagpur	स्थान	Raipur
21:08:44 उत्तर	अक्षांश	21:15:04 उत्तर
79:05:44 पूर्व	रेखांश	81:37:04 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:13:37	स्थानिक संस्कार	-00:03:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:38:25	सूर्योदय	06:30:30
18:59:02	सूर्यास्त	17:22:24
23:41:52	चित्रपक्षीय अयनांश	23:45:47

मकर	लग्न	धनु
शनि	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
वृष	राशि	वृष
शुक्र	राशि-स्वामी	शुक्र
कृतिका	नक्षत्र	मृगशिरा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	मंगल
3	चरण	1
शूल	योग	साध्य
बालव	करण	बालव
उ-उदय	जन्म नामाक्षर	वे-वैशाली
कर्क	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
वैश्य	वर्ण	वैश्य
चतुष्पाद	वश्य	चतुष्पाद
मेष	योनि	सर्प
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
गरूड़	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 2वर्ष 10मा 2दि		27:35:57	मक	लग्न	धनु	20:08:00	मंगल 5वर्ष 5मा 14दि	
राहु		23:55:21	मिथु	सूर्य	वृश्चि	24:32:42	गुरु	
12/05/2008		03:41:21	वृष	चंद्र	वृष	26:16:22	25/05/2016	
12/05/2026		04:18:55	मीन	मंगल व	कर्क	02:59:49	25/05/2032	
राहु	23/01/2011	03:01:36	मिथु	बुध	वृश्चि	03:46:55	गुरु	14/07/2018
गुरु	18/06/2013	04:03:30	वृष	गुरु	कन्या	17:16:35	शनि	24/01/2021
शनि	24/04/2016	20:42:32	वृष	शुक्र	मक	07:51:11	बुध	02/05/2023
बुध	11/11/2018	04:10:41	धनु व	शनि	मक	20:30:12	केतु	07/04/2024
केतु	30/11/2019	22:16:32	कुंभ व	राहु व	वृश्चि	27:44:07	शुक्र	07/12/2026
शुक्र	29/11/2022	22:16:32	सिंह व	केतु व	वृष	27:44:07	सूर्य	25/09/2027
सूर्य	24/10/2023	04:35:01	धनु व	हर्ष	धनु	22:39:21	चन्द्र	24/01/2029
चन्द्र	24/04/2025	14:52:00	धनु व	नेप	धनु	23:48:05	मंगल	31/12/2029
मंगल	12/05/2026	16:05:32	तुला व	प्लूटो	वृश्चि	00:05:33	राहु	25/05/2032

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:41:52 चित्रपक्षीय अयनांश 23:45:47

लग्न-चलित

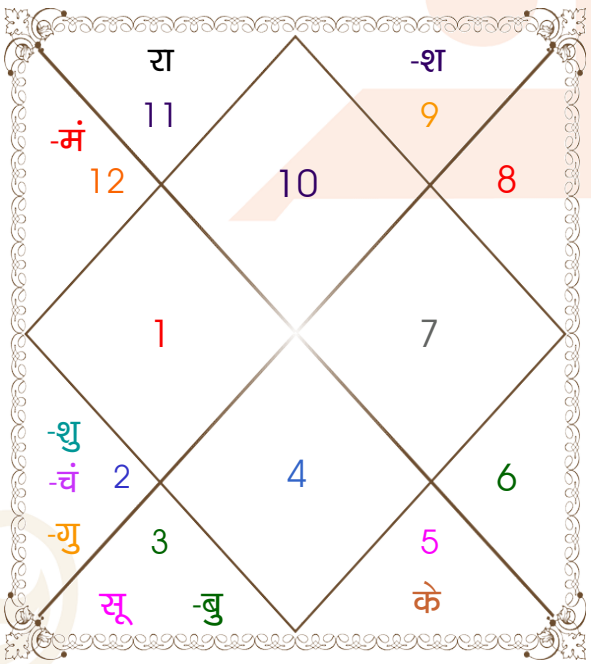

लग्न-चलित

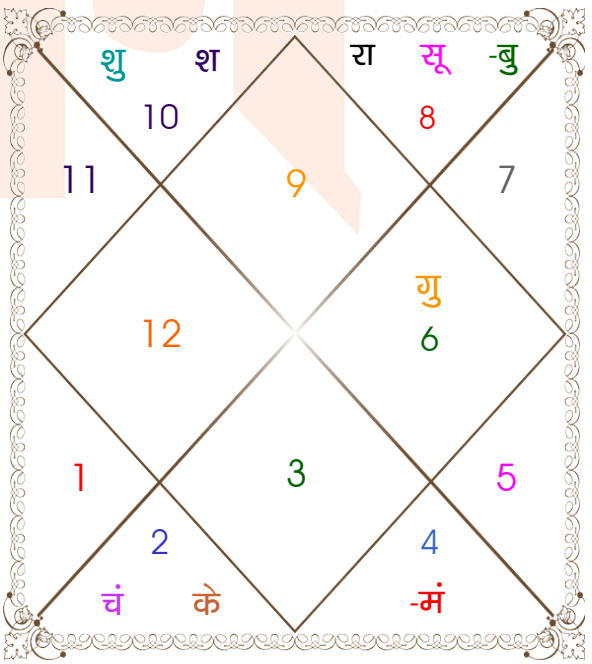

चन्द्र कुंडली

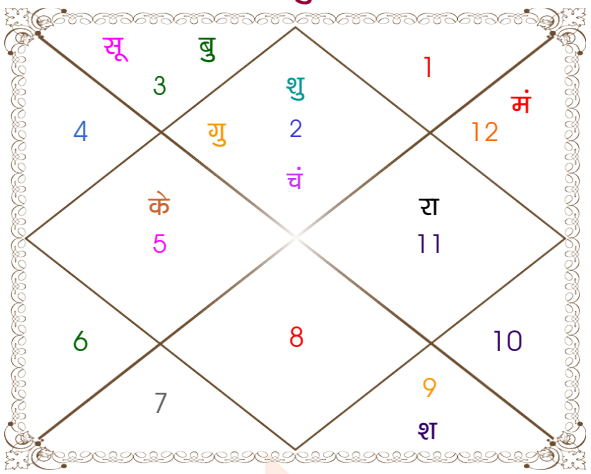

चन्द्र कुंडली

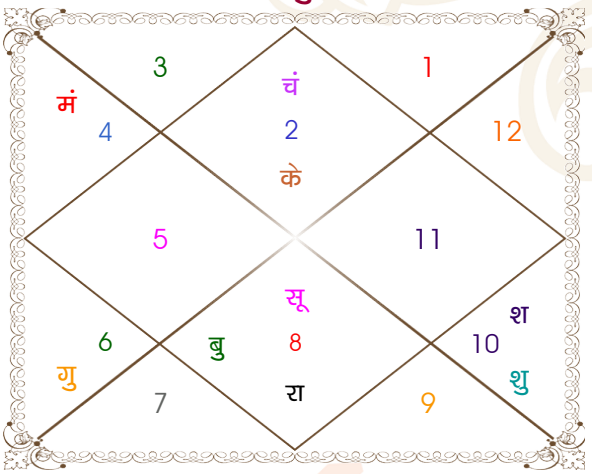

सूर्य कुंडली

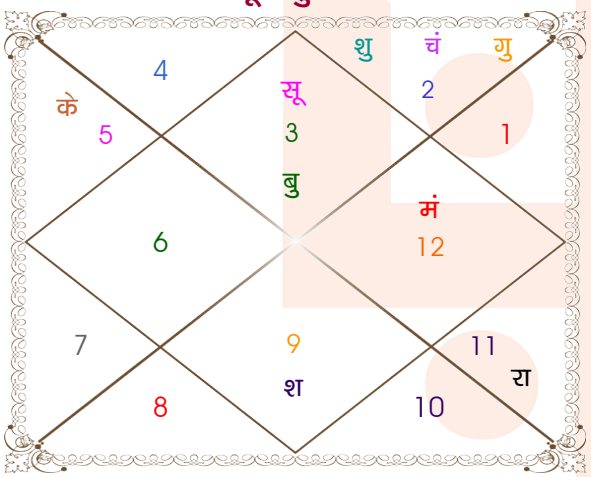

सूर्य कुंडली

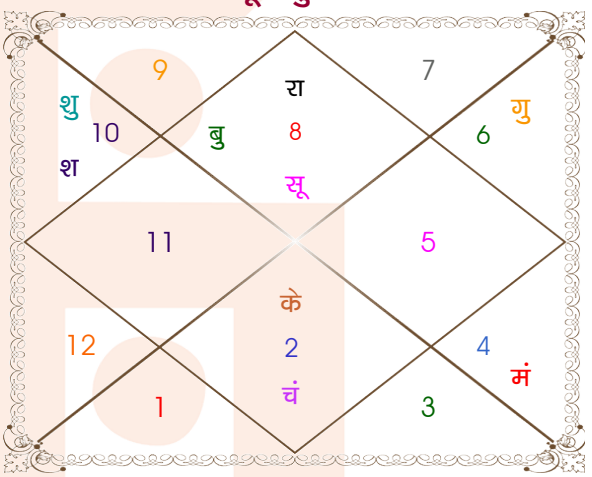

नवमांश कुंडली

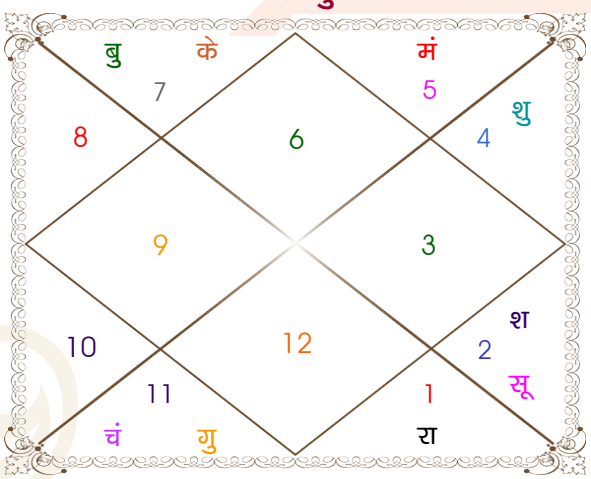

नवमांश कुंडली

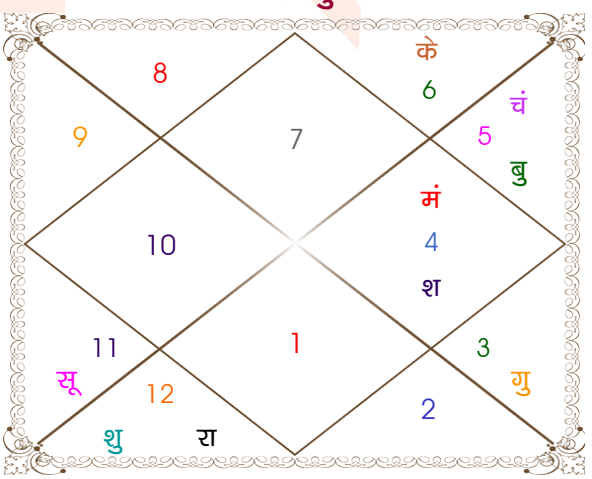

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

के.पी. अयनांश : 23:35:36

फॉरच्युना : धनु 07:21:57

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	23:55:21	बुध	गुरु	बुध	बुध
चंद्र		वृष	03:41:21	शुक्र	सूर्य	शनि	केतु
मंगल		मीन	04:18:55	गुरु	शनि	शनि	शुक्र
बुध		मिथु	03:01:36	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
गुरु		वृष	04:03:30	शुक्र	सूर्य	शनि	शुक्र
शुक्र		वृष	20:42:32	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र
शनि	व	धनु	04:10:41	गुरु	केतु	चंद्र	शनि
राहु	व	कुंभ	22:16:32	शनि	गुरु	शनि	बुध
केतु	व	सिंह	22:16:32	सूर्य	शुक्र	शनि	बुध
हर्ष	व	धनु	04:35:01	गुरु	केतु	चंद्र	शुक्र
नेप	व	धनु	14:52:00	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि
प्लूटो	व	तुला	16:05:32	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	27:35:57	शनि	मंगल	गुरु	मंगल
2	मीन	05:32:20	गुरु	शनि	बुध	बुध
3	मेष	09:34:08	मंगल	केतु	शनि	शनि
4	वृष	07:49:16	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र
5	मिथु	02:48:41	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
6	मिथु	28:03:04	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
7	कर्क	27:35:57	चंद्र	बुध	गुरु	मंगल
8	कन्या	05:32:20	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र
9	तुला	09:34:08	शुक्र	राहु	गुरु	शुक्र
10	वृश्चि	07:49:16	मंगल	शनि	केतु	गुरु
11	धनु	02:48:41	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
12	धनु	28:03:04	गुरु	सूर्य	चंद्र	बुध

भाव कुंडली

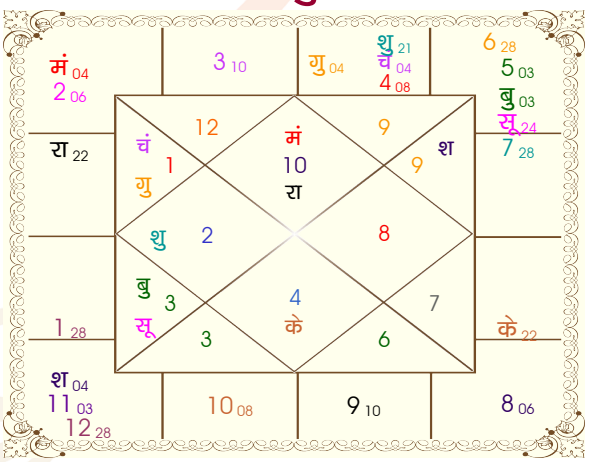

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 5 मास 14 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:17

फॉरच्युना : मिथुन 21:51:39

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	24:32:42	मंगल	बुध	राहु	गुरु
चंद्र		वृष	26:16:22	शुक्र	मंगल	गुरु	गुरु
मंगल	व	कर्क	02:59:49	चंद्र	गुरु	राहु	सूर्य
बुध		वृश्चि	03:46:55	मंगल	शनि	शनि	बुध
गुरु		कन्या	17:16:35	बुध	चंद्र	शनि	राहु
शुक्र		मक	07:51:11	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
शनि		मक	20:30:12	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
राहु	व	वृश्चि	27:44:07	मंगल	बुध	गुरु	राहु
केतु	व	वृष	27:44:07	शुक्र	मंगल	गुरु	राहु
हर्ष		धनु	22:39:21	गुरु	शुक्र	शनि	शुक्र
नेप		धनु	23:48:05	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु
प्लूटो		वृश्चि	00:05:33	मंगल	गुरु	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	20:08:00	गुरु	शुक्र	गुरु	गुरु
2	मक	24:07:23	शनि	मंगल	राहु	राहु
3	कुंभ	29:49:33	शनि	गुरु	चंद्र	गुरु
4	मेष	02:36:09	मंगल	केतु	शुक्र	बुध
5	वृष	00:31:43	शुक्र	सूर्य	राहु	शुक्र
6	वृष	25:19:46	शुक्र	मंगल	राहु	केतु
7	मिथु	20:08:00	बुध	गुरु	गुरु	गुरु
8	कर्क	24:07:23	चंद्र	बुध	राहु	राहु
9	सिंह	29:49:33	सूर्य	सूर्य	राहु	शनि
10	तुला	02:36:09	शुक्र	मंगल	केतु	बुध
11	वृश्चि	00:31:43	मंगल	गुरु	चंद्र	सूर्य
12	वृश्चि	25:19:46	मंगल	बुध	राहु	केतु

भाव कुंडली

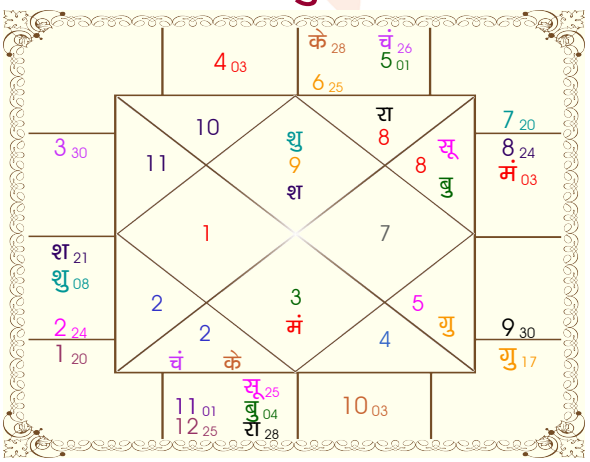

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल+ बुध, शनि- राहु,
2	सूर्य- गुरु- राहु-
3	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध- गुरु, शुक्र, राहु,
4	शुक्र, केतु+
5	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु,
6	बुध-
7	चंद्र- शुक्र- शनि, केतु,
8	बुध-
9	शुक्र- केतु-
10	मंगल- बुध-
11	सूर्य- मंगल, गुरु- शनि, राहु-
12	सूर्य- गुरु- राहु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध, गुरु- शुक्र, शनि,
2	बुध- शनि-
3	बुध- शनि-
4	चंद्र- मंगल- केतु-
5	शुक्र-
6	चंद्र, गुरु, शुक्र- शनि, केतु,
7	सूर्य- चंद्र, मंगल, बुध- राहु- केतु,
8	चंद्र- गुरु- शनि-
9	सूर्य- मंगल, गुरु, शुक्र-
10	शुक्र-
11	सूर्य+ चंद्र- मंगल- बुध, शुक्र, राहु, केतु-
12	चंद्र- मंगल- राहु, केतु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3, 5, 11- 12-
चंद्र	3, 5, 7-
मंगल	1+ 3- 10- 11,
बुध	1, 3- 5, 6- 8- 10-
गुरु	2- 3, 5, 11- 12-
शुक्र	3, 4, 7- 9-
शनि	1- 7, 11,
राहु	1, 2- 3, 11- 12-
केतु	4+ 7, 9-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7- 9- 11+
चंद्र	4- 6, 7, 8- 11- 12-
मंगल	1- 4- 7, 9, 11- 12-
बुध	1, 2- 3- 7- 11,
गुरु	1- 6, 8- 9,
शुक्र	1, 5- 6- 9- 10- 11,
शनि	1, 2- 3- 6, 8-
राहु	7- 11, 12,
केतु	4- 6, 7, 11- 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

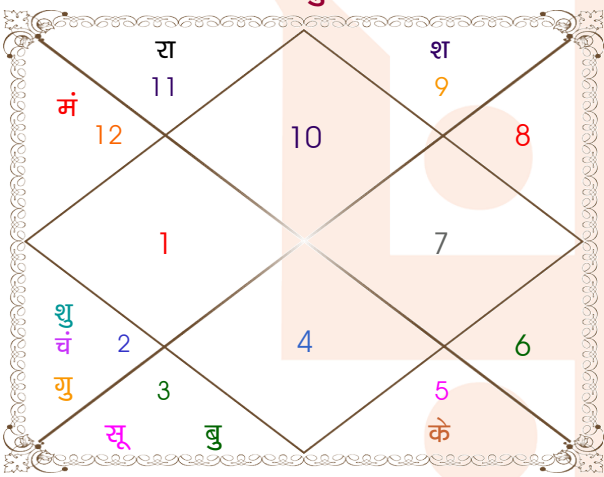

देह विचारः

लग्न कुंडली

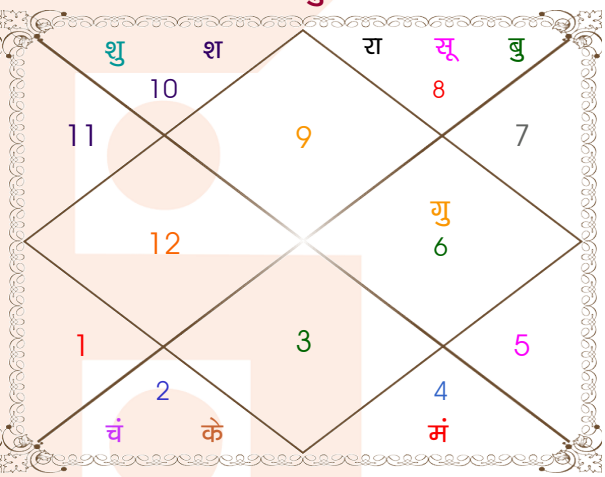

देह विचारः

होरा कुंडली

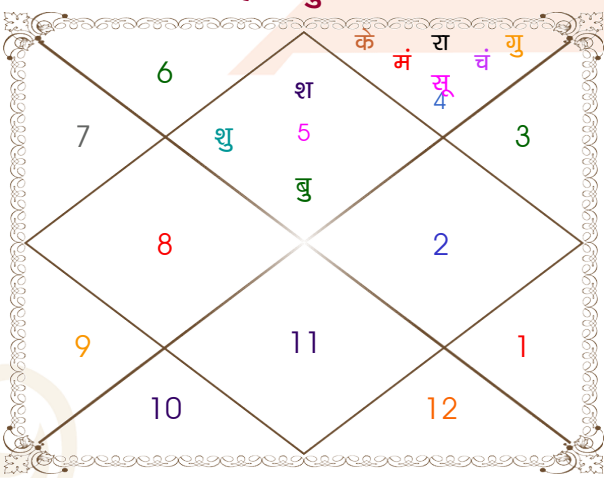

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

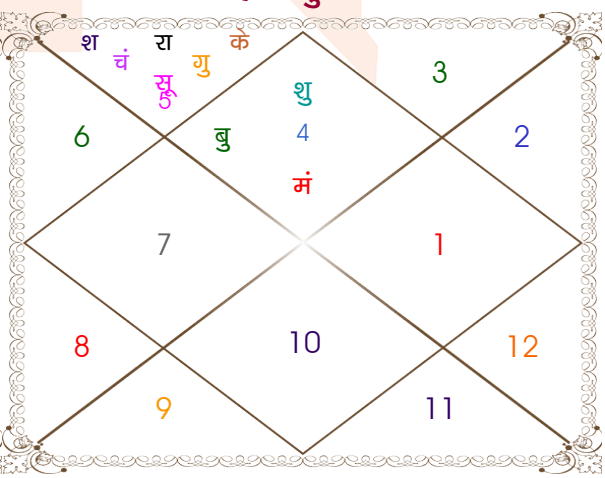

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

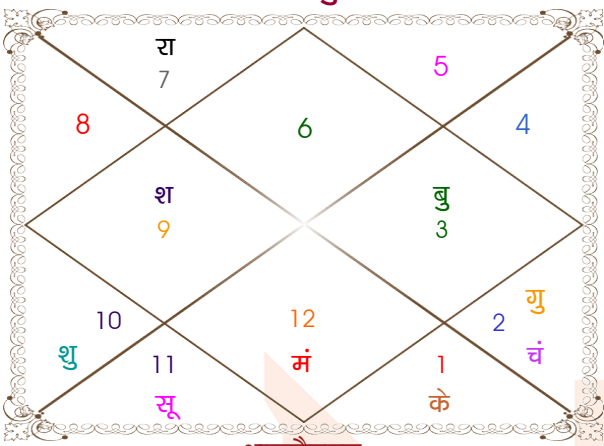

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

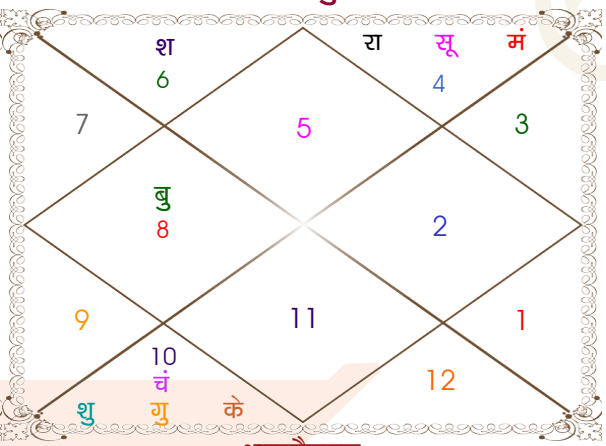

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

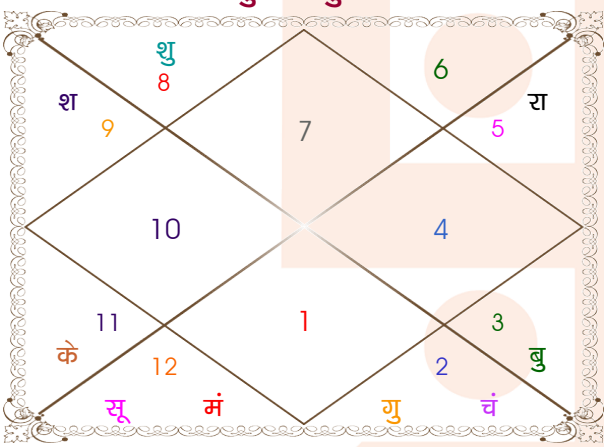

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

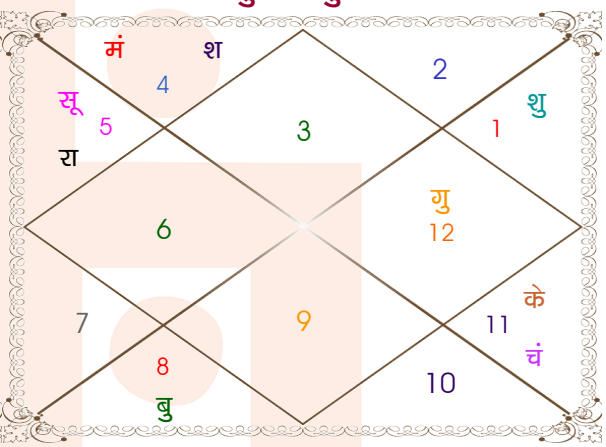

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

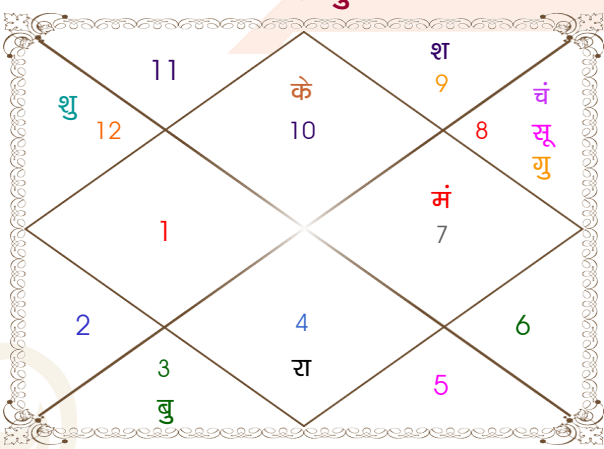

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

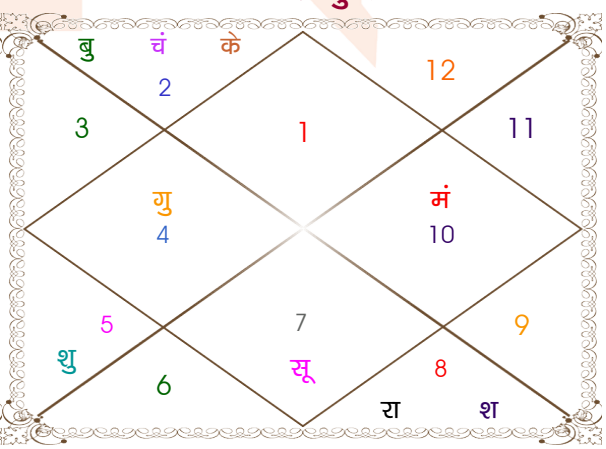

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

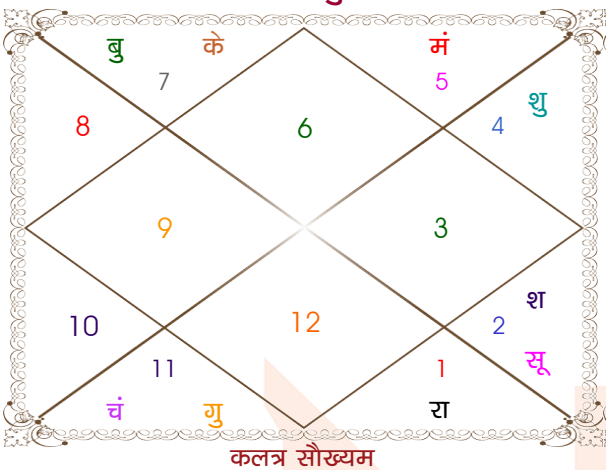

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

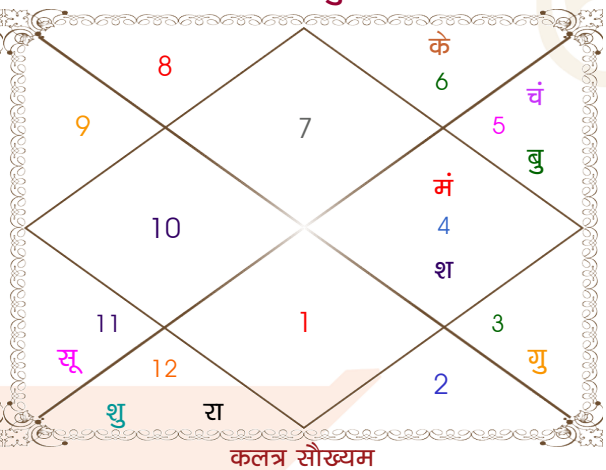

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

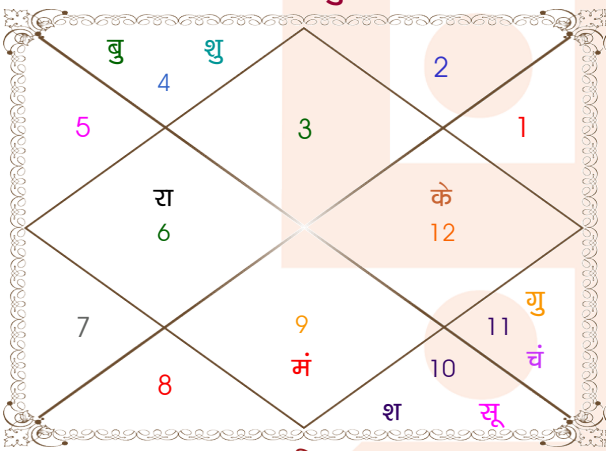

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

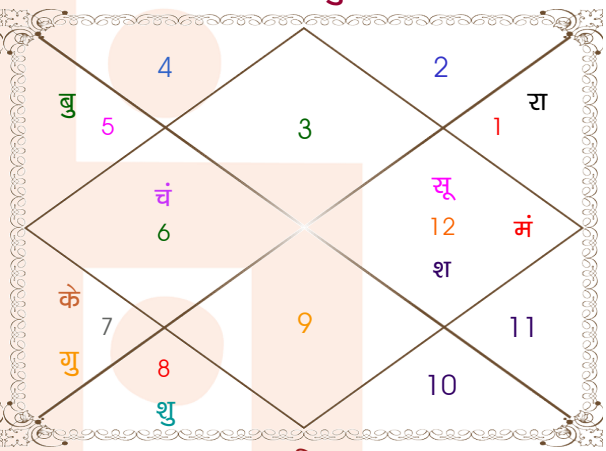

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

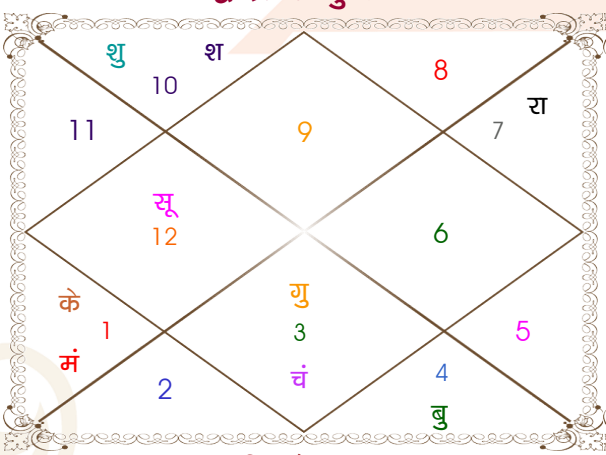

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

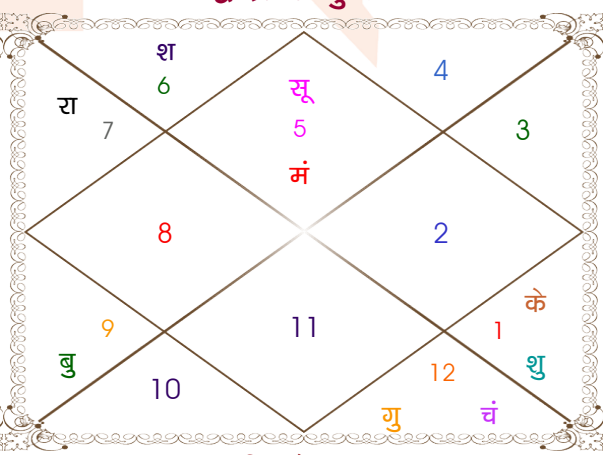

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

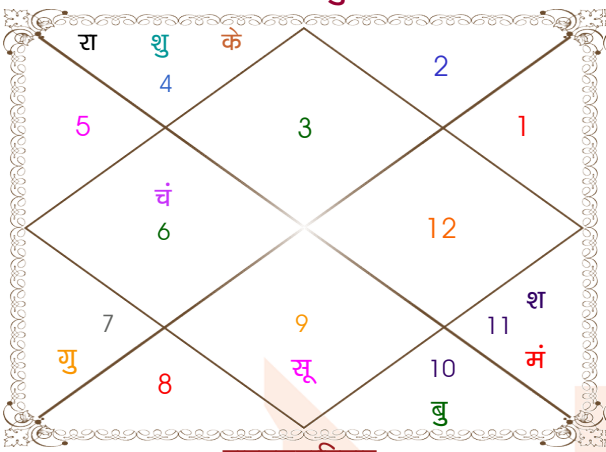

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

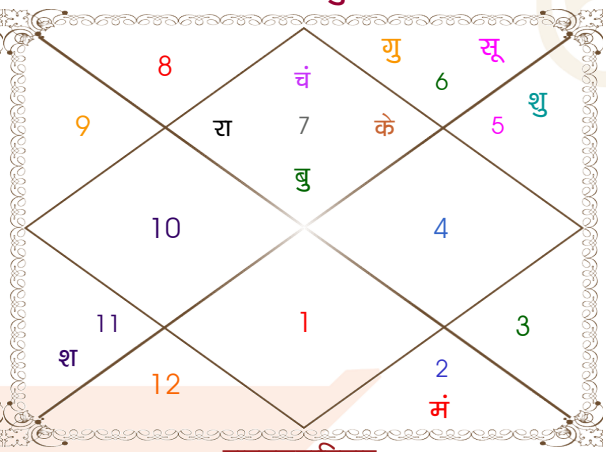

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

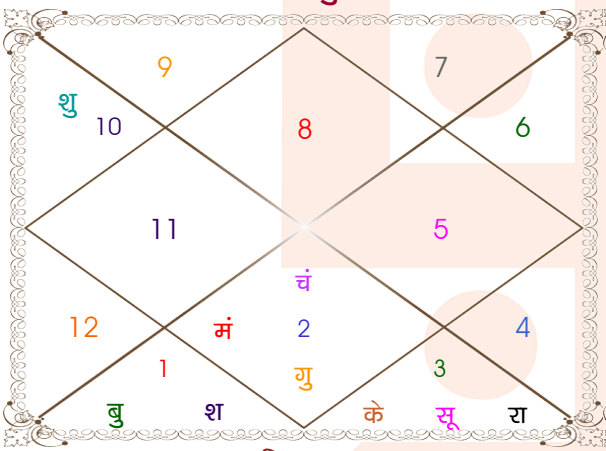

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

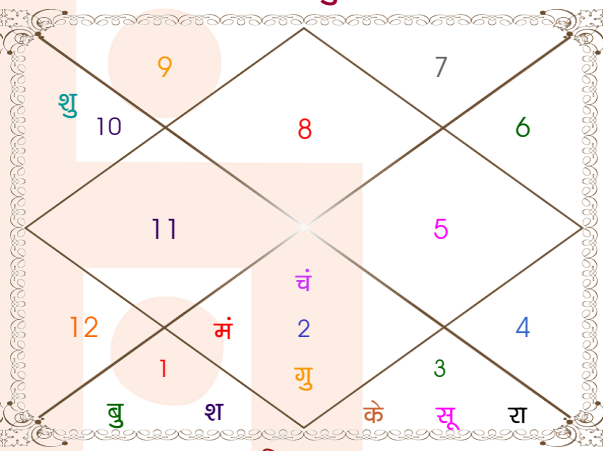

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

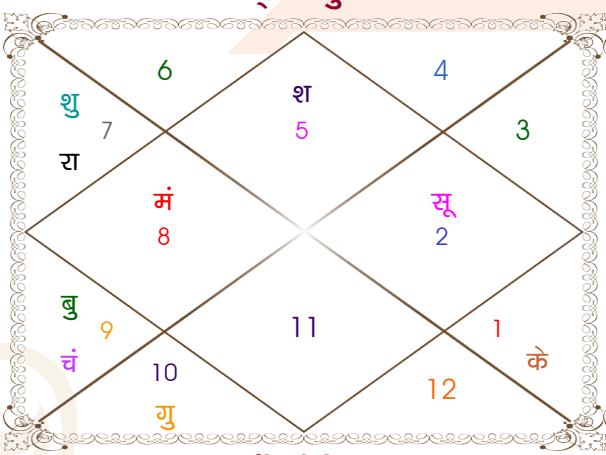

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

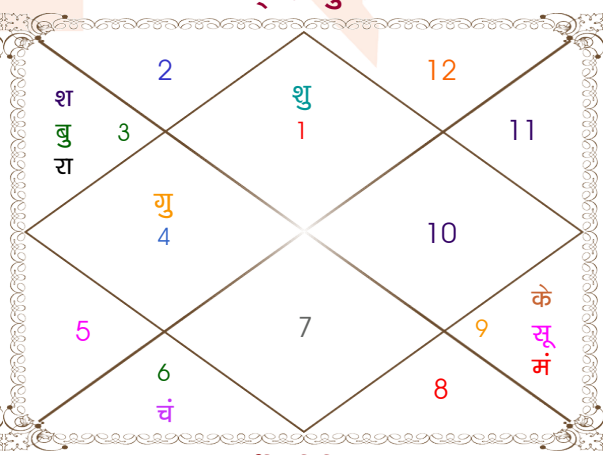

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Pradeep

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Vishakha

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	4	3	2	4	7	4	4	4	3	7	5	1	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
कुल	3	4	2	7	4	4	5	3	2	4	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	7
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	2	3	5	2	4	6	4	4	4	6	5	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	7
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	4	7	4	3	4	6	3	5	2	2	3	6	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	7	5	0	3	2	3	2	8	3	3	2	1	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
कुल	4	2	2	4	5	4	4	2	2	4	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
कुल	6	2	5	3	7	4	5	4	4	6	5	3	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	5
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	6
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
कुल	6	3	1	6	6	5	6	3	2	5	5	6	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	3	7	4	2	6	4	5	3	5	6	6	5	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	8
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	4	5	6	4	4	6	4	5	5	4	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
कुल	5	2	4	6	5	2	3	3	6	6	5	5	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
कुल	6	5	4	4	4	6	4	3	3	5	2	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	2	4	3	6	6	3	2	3	1	2	5	2	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	2	4	5	3	3	4	3	4	4	1	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	8	2	5	4	3	4	5	4	4	3	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
शनि	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	5	4	3	3	3	6	5	3	3	4	6	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

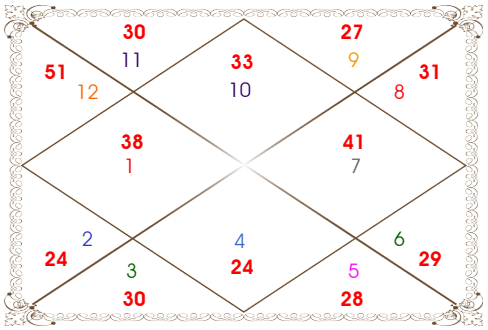

सर्वाष्टकवर्ग

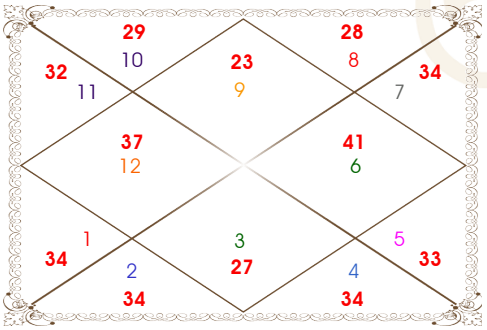

Pradeep

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	6	3	2	3	1	2	5	2	2	4	3	6	39
गुरु	5	3	7	4	2	6	4	5	3	5	6	6	56
मंगल	5	0	3	2	3	2	8	3	3	2	1	7	39
सूर्य	5	1	4	3	2	4	7	4	4	4	3	7	48
शुक्र	5	5	2	4	6	5	2	3	3	6	6	5	52
बुध	5	3	6	2	5	3	7	4	5	4	4	6	54
चंद्र	5	4	2	3	5	2	4	6	4	4	4	6	49
लग्न	2	5	4	3	4	5	4	4	3	4	3	8	49
बिन्दु	38	24	30	24	28	29	41	31	27	33	30	51	386
रेखा	26	40	34	40	36	35	23	33	37	31	34	13	382

Vishakha

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	5	4	3	3	3	6	5	3	3	4	6	4	49
सूर्य	3	4	2	7	4	4	5	3	2	4	6	4	48
चंद्र	4	7	4	3	4	6	3	5	2	2	3	6	49
मंगल	4	2	2	4	5	4	4	2	2	4	3	3	39
बुध	6	3	1	6	6	5	6	3	2	5	5	6	54
गुरु	4	5	6	4	4	6	4	5	5	4	4	5	56
शुक्र	6	5	4	4	4	6	4	3	3	5	2	6	52
शनि	2	4	5	3	3	4	3	4	4	1	3	3	39
बिन्दु	34	34	27	34	33	41	34	28	23	29	32	37	386
रेखा	30	30	37	30	31	23	30	36	41	35	32	27	382

शोध्य पिंड - Pradeep

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	115	137	81	150	106	72	88	129
ग्रह पिंड	77	52	68	60	52	51	16	59
शोध्य पिंड	192	189	149	210	158	123	104	188

शोध्य पिंड - Vishakha

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	83	120	142	98	193	28	98	81
ग्रह पिंड	20	32	85	60	68	35	18	55
शोध्य पिंड	103	152	227	158	261	63	116	136

विंशोत्तरी दशा

सूर्य 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
09/07/1988		13/05/1991		12/05/2001	
13/05/1991		12/05/2001		12/05/2008	
	00/00/0000	चंद्र	12/03/1992	मंगल	08/10/2001
	00/00/0000	मंगल	11/10/1992	राहु	27/10/2002
	00/00/0000	राहु	12/04/1994	गुरु	03/10/2003
	00/00/0000	गुरु	12/08/1995	शनि	11/11/2004
	09/07/1988	शनि	12/03/1997	बुध	08/11/2005
शनि	28/02/1989	बुध	12/08/1998	केतु	06/04/2006
बुध	05/01/1990	केतु	13/03/1999	शुक्र	06/06/2007
केतु	12/05/1990	शुक्र	11/11/2000	सूर्य	12/10/2007
शुक्र	13/05/1991	सूर्य	12/05/2001	चंद्र	12/05/2008

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
12/05/2008		12/05/2026		12/05/2042	
12/05/2026		12/05/2042		12/05/2061	
राहु	23/01/2011	गुरु	30/06/2028	शनि	15/05/2045
गुरु	18/06/2013	शनि	11/01/2031	बुध	23/01/2048
शनि	24/04/2016	बुध	18/04/2033	केतु	03/03/2049
बुध	11/11/2018	केतु	25/03/2034	शुक्र	03/05/2052
केतु	30/11/2019	शुक्र	23/11/2036	सूर्य	15/04/2053
शुक्र	29/11/2022	सूर्य	11/09/2037	चंद्र	14/11/2054
सूर्य	24/10/2023	चंद्र	11/01/2039	मंगल	24/12/2055
चंद्र	24/04/2025	मंगल	18/12/2039	राहु	30/10/2058
मंगल	12/05/2026	राहु	12/05/2042	गुरु	12/05/2061

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
12/05/2061		12/05/2078		12/05/2085	
12/05/2078		12/05/2085		13/05/2105	
बुध	09/10/2063	केतु	09/10/2078	शुक्र	11/09/2088
केतु	05/10/2064	शुक्र	09/12/2079	सूर्य	11/09/2089
शुक्र	06/08/2067	सूर्य	14/04/2080	चंद्र	13/05/2091
सूर्य	11/06/2068	चंद्र	14/11/2080	मंगल	12/07/2092
चंद्र	11/11/2069	मंगल	12/04/2081	राहु	13/07/2095
मंगल	08/11/2070	राहु	30/04/2082	गुरु	13/03/2098
राहु	27/05/2073	गुरु	06/04/2083	शनि	13/05/2101
गुरु	02/09/2075	शनि	15/05/2084	बुध	13/03/2104
शनि	12/05/2078	बुध	12/05/2085	केतु	13/05/2105

मंगल 5 वर्ष 5 मास 14 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
10/12/1992		26/05/1998		25/05/2016	
26/05/1998		25/05/2016		25/05/2032	
	00/00/0000	राहु	05/02/2001	गुरु	14/07/2018
	10/12/1992	गुरु	02/07/2003	शनि	24/01/2021
गुरु	16/10/1993	शनि	08/05/2006	बुध	02/05/2023
शनि	25/11/1994	बुध	24/11/2008	केतु	07/04/2024
बुध	22/11/1995	केतु	13/12/2009	शुक्र	07/12/2026
केतु	19/04/1996	शुक्र	12/12/2012	सूर्य	25/09/2027
शुक्र	19/06/1997	सूर्य	06/11/2013	चंद्र	24/01/2029
सूर्य	25/10/1997	चंद्र	08/05/2015	मंगल	31/12/2029
चंद्र	26/05/1998	मंगल	25/05/2016	राहु	25/05/2032

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
25/05/2032		26/05/2051		25/05/2068	
26/05/2051		25/05/2068		26/05/2075	
शनि	29/05/2035	बुध	22/10/2053	केतु	22/10/2068
बुध	05/02/2038	केतु	19/10/2054	शुक्र	22/12/2069
केतु	17/03/2039	शुक्र	19/08/2057	सूर्य	29/04/2070
शुक्र	17/05/2042	सूर्य	25/06/2058	चंद्र	28/11/2070
सूर्य	29/04/2043	चंद्र	25/11/2059	मंगल	26/04/2071
चंद्र	27/11/2044	मंगल	21/11/2060	राहु	13/05/2072
मंगल	06/01/2046	राहु	10/06/2063	गुरु	19/04/2073
राहु	12/11/2048	गुरु	15/09/2065	शनि	29/05/2074
गुरु	26/05/2051	शनि	25/05/2068	बुध	26/05/2075

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
26/05/2075		26/05/2095		27/05/2101	
26/05/2095		27/05/2101		27/05/2111	
शुक्र	25/09/2078	सूर्य	13/09/2095	चंद्र	27/03/2102
सूर्य	25/09/2079	चंद्र	13/03/2096	मंगल	26/10/2102
चंद्र	26/05/2081	मंगल	19/07/2096	राहु	26/04/2104
मंगल	26/07/2082	राहु	13/06/2097	गुरु	26/08/2105
राहु	26/07/2085	गुरु	01/04/2098	शनि	27/03/2107
गुरु	26/03/2088	शनि	14/03/2099	बुध	26/08/2108
शनि	26/05/2091	बुध	19/01/2100	केतु	27/03/2109
बुध	26/03/2094	केतु	26/05/2100	शुक्र	26/11/2110
केतु	26/05/2095	शुक्र	27/05/2101	सूर्य	27/05/2111

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
24/04/2016		11/11/2018		30/11/2019	
11/11/2018		30/11/2019		29/11/2022	
बुध	03/09/2016	केतु	03/12/2018	शुक्र	30/05/2020
केतु	27/10/2016	शुक्र	05/02/2019	सूर्य	24/07/2020
शुक्र	31/03/2017	सूर्य	24/02/2019	चंद्र	23/10/2020
सूर्य	17/05/2017	चंद्र	28/03/2019	मंगल	26/12/2020
चंद्र	02/08/2017	मंगल	20/04/2019	राहु	09/06/2021
मंगल	26/09/2017	राहु	16/06/2019	गुरु	02/11/2021
राहु	12/02/2018	गुरु	06/08/2019	शनि	24/04/2022
गुरु	17/06/2018	शनि	06/10/2019	बुध	26/09/2022
शनि	11/11/2018	बुध	30/11/2019	केतु	29/11/2022

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
25/05/2016		14/07/2018		24/01/2021	
14/07/2018		24/01/2021		02/05/2023	
गुरु	06/09/2016	शनि	07/12/2018	बुध	21/05/2021
शनि	08/01/2017	बुध	17/04/2019	केतु	09/07/2021
बुध	28/04/2017	केतु	10/06/2019	शुक्र	24/11/2021
केतु	13/06/2017	शुक्र	11/11/2019	सूर्य	04/01/2022
शुक्र	20/10/2017	सूर्य	28/12/2019	चंद्र	14/03/2022
सूर्य	28/11/2017	चंद्र	14/03/2020	मंगल	01/05/2022
चंद्र	01/02/2018	मंगल	07/05/2020	राहु	02/09/2022
मंगल	19/03/2018	राहु	23/09/2020	गुरु	22/12/2022
राहु	14/07/2018	गुरु	24/01/2021	शनि	02/05/2023

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
29/11/2022		24/10/2023		24/04/2025	
24/10/2023		24/04/2025		12/05/2026	
सूर्य	16/12/2022	चंद्र	09/12/2023	मंगल	16/05/2025
चंद्र	12/01/2023	मंगल	10/01/2024	राहु	13/07/2025
मंगल	31/01/2023	राहु	01/04/2024	गुरु	02/09/2025
राहु	22/03/2023	गुरु	13/06/2024	शनि	02/11/2025
गुरु	04/05/2023	शनि	08/09/2024	बुध	26/12/2025
शनि	25/06/2023	बुध	24/11/2024	केतु	17/01/2026
बुध	11/08/2023	केतु	26/12/2024	शुक्र	22/03/2026
केतु	30/08/2023	शुक्र	27/03/2025	सूर्य	10/04/2026
शुक्र	24/10/2023	सूर्य	24/04/2025	चंद्र	12/05/2026

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
02/05/2023		07/04/2024		07/12/2026	
07/04/2024		07/12/2026		25/09/2027	
केतु	22/05/2023	शुक्र	16/09/2024	सूर्य	21/12/2026
शुक्र	18/07/2023	सूर्य	04/11/2024	चंद्र	15/01/2027
सूर्य	04/08/2023	चंद्र	24/01/2025	मंगल	01/02/2027
चंद्र	01/09/2023	मंगल	22/03/2025	राहु	17/03/2027
मंगल	21/09/2023	राहु	15/08/2025	गुरु	25/04/2027
राहु	11/11/2023	गुरु	23/12/2025	शनि	10/06/2027
गुरु	26/12/2023	शनि	26/05/2026	बुध	21/07/2027
शनि	18/02/2024	बुध	11/10/2026	केतु	07/08/2027
बुध	07/04/2024	केतु	07/12/2026	शुक्र	25/09/2027

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
12/05/2026		30/06/2028		11/01/2031	
30/06/2028		11/01/2031		18/04/2033	
गुरु	24/08/2026	शनि	23/11/2028	बुध	08/05/2031
शनि	26/12/2026	बुध	03/04/2029	केतु	25/06/2031
बुध	15/04/2027	केतु	27/05/2029	शुक्र	10/11/2031
केतु	30/05/2027	शुक्र	28/10/2029	सूर्य	22/12/2031
शुक्र	07/10/2027	सूर्य	14/12/2029	चंद्र	29/02/2032
सूर्य	15/11/2027	चंद्र	01/03/2030	मंगल	17/04/2032
चंद्र	19/01/2028	मंगल	24/04/2030	राहु	19/08/2032
मंगल	05/03/2028	राहु	10/09/2030	गुरु	08/12/2032
राहु	30/06/2028	गुरु	11/01/2031	शनि	18/04/2033

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
25/09/2027		24/01/2029		31/12/2029	
24/01/2029		31/12/2029		25/05/2032	
चंद्र	05/11/2027	मंगल	13/02/2029	राहु	11/05/2030
मंगल	03/12/2027	राहु	05/04/2029	गुरु	05/09/2030
राहु	14/02/2028	गुरु	20/05/2029	शनि	22/01/2031
गुरु	19/04/2028	शनि	13/07/2029	बुध	26/05/2031
शनि	05/07/2028	बुध	31/08/2029	केतु	16/07/2031
बुध	12/09/2028	केतु	20/09/2029	शुक्र	09/12/2031
केतु	10/10/2028	शुक्र	15/11/2029	सूर्य	22/01/2032
शुक्र	31/12/2028	सूर्य	02/12/2029	चंद्र	04/04/2032
सूर्य	24/01/2029	चंद्र	31/12/2029	मंगल	25/05/2032

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
18/04/2033		25/03/2034		23/11/2036	
25/03/2034		23/11/2036		11/09/2037	
केतु	08/05/2033	शुक्र	03/09/2034	सूर्य	07/12/2036
शुक्र	03/07/2033	सूर्य	22/10/2034	चंद्र	01/01/2037
सूर्य	21/07/2033	चंद्र	11/01/2035	मंगल	18/01/2037
चंद्र	18/08/2033	मंगल	09/03/2035	राहु	03/03/2037
मंगल	07/09/2033	राहु	02/08/2035	गुरु	10/04/2037
राहु	28/10/2033	गुरु	10/12/2035	शनि	27/05/2037
गुरु	12/12/2033	शनि	12/05/2036	बुध	07/07/2037
शनि	04/02/2034	बुध	27/09/2036	केतु	24/07/2037
बुध	25/03/2034	केतु	23/11/2036	शुक्र	11/09/2037

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
25/05/2032		29/05/2035		05/02/2038	
29/05/2035		05/02/2038		17/03/2039	
शनि	15/11/2032	बुध	16/10/2035	केतु	01/03/2038
बुध	20/04/2033	केतु	12/12/2035	शुक्र	07/05/2038
केतु	23/06/2033	शुक्र	24/05/2036	सूर्य	28/05/2038
शुक्र	23/12/2033	सूर्य	12/07/2036	चंद्र	30/06/2038
सूर्य	16/02/2034	चंद्र	02/10/2036	मंगल	24/07/2038
चंद्र	19/05/2034	मंगल	28/11/2036	राहु	23/09/2038
मंगल	22/07/2034	राहु	25/04/2037	गुरु	16/11/2038
राहु	03/01/2035	गुरु	03/09/2037	शनि	19/01/2039
गुरु	29/05/2035	शनि	05/02/2038	बुध	17/03/2039

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
11/09/2037		11/01/2039		18/12/2039	
11/01/2039		18/12/2039		12/05/2042	
चंद्र	21/10/2037	मंगल	31/01/2039	राहु	27/04/2040
मंगल	19/11/2037	राहु	23/03/2039	गुरु	22/08/2040
राहु	31/01/2038	गुरु	07/05/2039	शनि	08/01/2041
गुरु	06/04/2038	शनि	30/06/2039	बुध	12/05/2041
शनि	22/06/2038	बुध	18/08/2039	केतु	02/07/2041
बुध	30/08/2038	केतु	07/09/2039	शुक्र	25/11/2041
केतु	27/09/2038	शुक्र	02/11/2039	सूर्य	08/01/2042
शुक्र	18/12/2038	सूर्य	19/11/2039	चंद्र	22/03/2042
सूर्य	11/01/2039	चंद्र	18/12/2039	मंगल	12/05/2042

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
17/03/2039		17/05/2042		29/04/2043	
17/05/2042		29/04/2043		27/11/2044	
शुक्र	26/09/2039	सूर्य	03/06/2042	चंद्र	16/06/2043
सूर्य	23/11/2039	चंद्र	02/07/2042	मंगल	20/07/2043
चंद्र	27/02/2040	मंगल	22/07/2042	राहु	15/10/2043
मंगल	05/05/2040	राहु	12/09/2042	गुरु	31/12/2043
राहु	25/10/2040	गुरु	29/10/2042	शनि	31/03/2044
गुरु	28/03/2041	शनि	23/12/2042	बुध	21/06/2044
शनि	28/09/2041	बुध	10/02/2043	केतु	25/07/2044
बुध	10/03/2042	केतु	02/03/2043	शुक्र	29/10/2044
केतु	17/05/2042	शुक्र	29/04/2043	सूर्य	27/11/2044

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
12/05/2042		15/05/2045		23/01/2048	
15/05/2045		23/01/2048		03/03/2049	
शनि	02/11/2042	बुध	01/10/2045	केतु	16/02/2048
बुध	07/04/2043	केतु	28/11/2045	शुक्र	23/04/2048
केतु	10/06/2043	शुक्र	11/05/2046	सूर्य	14/05/2048
शुक्र	10/12/2043	सूर्य	29/06/2046	चंद्र	16/06/2048
सूर्य	03/02/2044	चंद्र	19/09/2046	मंगल	10/07/2048
चंद्र	05/05/2044	मंगल	15/11/2046	राहु	09/09/2048
मंगल	08/07/2044	राहु	12/04/2047	गुरु	02/11/2048
राहु	20/12/2044	गुरु	21/08/2047	शनि	05/01/2049
गुरु	15/05/2045	शनि	23/01/2048	बुध	03/03/2049

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
27/11/2044		06/01/2046		12/11/2048	
06/01/2046		12/11/2048		26/05/2051	
मंगल	21/12/2044	राहु	11/06/2046	गुरु	15/03/2049
राहु	19/02/2045	गुरु	28/10/2046	शनि	09/08/2049
गुरु	14/04/2045	शनि	11/04/2047	बुध	18/12/2049
शनि	18/06/2045	बुध	05/09/2047	केतु	10/02/2050
बुध	14/08/2045	केतु	05/11/2047	शुक्र	14/07/2050
केतु	07/09/2045	शुक्र	26/04/2048	सूर्य	29/08/2050
शुक्र	13/11/2045	सूर्य	17/06/2048	चंद्र	14/11/2050
सूर्य	03/12/2045	चंद्र	12/09/2048	मंगल	07/01/2051
चंद्र	06/01/2046	मंगल	12/11/2048	राहु	26/05/2051

योगिनी दशा

उल्का 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
09/07/1988		13/05/1991		12/05/1998	
13/05/1991		12/05/1998		12/05/2006	
	00/00/0000	सिद्ध	21/09/1992	संक	21/02/2000
	09/07/1988	संक	12/04/1994	मंग	12/05/2000
संक	11/11/1988	मंग	22/06/1994	पिंग	21/10/2000
मंग	10/01/1989	पिंग	11/11/1994	धांय	22/06/2001
पिंग	12/05/1989	धांय	12/06/1995	भ्राम	12/05/2002
धांय	11/11/1989	भ्राम	22/03/1996	भद्रि	22/06/2003
भ्राम	12/07/1990	भद्रि	12/03/1997	उल्क	21/10/2004
भद्रि	13/05/1991	उल्क	12/05/1998	सिद्ध	12/05/2006

संकटा 6 वर्ष 2 मास 25 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
10/12/1992		07/03/1999		06/03/2000	
07/03/1999		06/03/2000		06/03/2002	
संक	15/12/1992	मंग	17/03/1999	पिंग	16/04/2000
मंग	06/03/1993	पिंग	06/04/1999	धांय	15/06/2000
पिंग	16/08/1993	धांय	07/05/1999	भ्राम	05/09/2000
धांय	16/04/1994	भ्राम	16/06/1999	भद्रि	15/12/2000
भ्राम	07/03/1995	भद्रि	06/08/1999	उल्क	16/04/2001
भद्रि	16/04/1996	उल्क	06/10/1999	सिद्ध	05/09/2001
उल्क	16/08/1997	सिद्ध	16/12/1999	संक	14/02/2002
सिद्ध	07/03/1999	संक	06/03/2000	मंग	06/03/2002

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
12/05/2006		13/05/2007		12/05/2009	
13/05/2007		12/05/2009		12/05/2012	
मंग	23/05/2006	पिंग	22/06/2007	धांय	11/08/2009
पिंग	12/06/2006	धांय	22/08/2007	भ्राम	11/12/2009
धांय	12/07/2006	भ्राम	11/11/2007	भद्रि	12/05/2010
भ्राम	22/08/2006	भद्रि	21/02/2008	उल्क	11/11/2010
भद्रि	12/10/2006	उल्क	21/06/2008	सिद्ध	12/06/2011
उल्क	11/12/2006	सिद्ध	11/11/2008	संक	11/02/2012
सिद्ध	20/02/2007	संक	22/04/2009	मंग	12/03/2012
संक	13/05/2007	मंग	12/05/2009	पिंग	12/05/2012

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
06/03/2002		06/03/2005		06/03/2009	
06/03/2005		06/03/2009		06/03/2014	
धांय	06/06/2002	भ्राम	16/08/2005	भद्रि	15/11/2009
भ्राम	06/10/2002	भद्रि	06/03/2006	उल्क	15/09/2010
भद्रि	07/03/2003	उल्क	05/11/2006	सिद्ध	05/09/2011
उल्क	05/09/2003	सिद्ध	16/08/2007	संक	15/10/2012
सिद्ध	05/04/2004	संक	06/07/2008	मंग	05/12/2012
संक	05/12/2004	मंग	15/08/2008	पिंग	16/03/2013
मंग	04/01/2005	पिंग	04/11/2008	धांय	16/08/2013
पिंग	06/03/2005	धांय	06/03/2009	भ्राम	06/03/2014

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
12/05/2012		12/05/2016		12/05/2021	
12/05/2016		12/05/2021		13/05/2027	
भ्राम	21/10/2012	भद्रि	21/01/2017	उल्क	12/05/2022
भद्रि	12/05/2013	उल्क	21/11/2017	सिद्ध	13/07/2023
उल्क	11/01/2014	सिद्ध	11/11/2018	संक	11/11/2024
सिद्ध	22/10/2014	संक	22/12/2019	मंग	10/01/2025
संक	11/09/2015	मंग	11/02/2020	पिंग	12/05/2025
मंग	22/10/2015	पिंग	22/05/2020	धांय	11/11/2025
पिंग	11/01/2016	धांय	21/10/2020	भ्राम	12/07/2026
धांय	12/05/2016	भ्राम	12/05/2021	भद्रि	13/05/2027

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
06/03/2014		06/03/2020		07/03/2027	
06/03/2020		07/03/2027		07/03/2035	
उल्क	07/03/2015	सिद्ध	16/07/2021	संक	15/12/2028
सिद्ध	06/05/2016	संक	04/02/2023	मंग	06/03/2029
संक	05/09/2017	मंग	16/04/2023	पिंग	16/08/2029
मंग	05/11/2017	पिंग	05/09/2023	धांय	16/04/2030
पिंग	06/03/2018	धांय	05/04/2024	भ्राम	07/03/2031
धांय	05/09/2018	भ्राम	14/01/2025	भद्रि	16/04/2032
भ्राम	07/05/2019	भद्रि	05/01/2026	उल्क	16/08/2033
भद्रि	06/03/2020	उल्क	07/03/2027	सिद्ध	07/03/2035

योगिनी दशा

उल्का 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
13/05/2027		12/05/2034		12/05/2042	
12/05/2034		12/05/2042		13/05/2043	
सिद्ध	21/09/2028	संक	21/02/2036	मंग	23/05/2042
संक	12/04/2030	मंग	12/05/2036	पिंग	12/06/2042
मंग	22/06/2030	पिंग	21/10/2036	धांय	12/07/2042
पिंग	11/11/2030	धांय	22/06/2037	भ्राम	22/08/2042
धांय	12/06/2031	भ्राम	12/05/2038	भद्रि	12/10/2042
भ्राम	22/03/2032	भद्रि	22/06/2039	उल्क	11/12/2042
भद्रि	12/03/2033	उल्क	21/10/2040	सिद्ध	20/02/2043
उल्क	12/05/2034	सिद्ध	12/05/2042	संक	13/05/2043

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
13/05/2043		12/05/2045		12/05/2048	
12/05/2045		12/05/2048		12/05/2052	
पिंग	22/06/2043	धांय	11/08/2045	भ्राम	21/10/2048
धांय	22/08/2043	भ्राम	11/12/2045	भद्रि	12/05/2049
भ्राम	11/11/2043	भद्रि	12/05/2046	उल्क	11/01/2050
भद्रि	21/02/2044	उल्क	11/11/2046	सिद्ध	22/10/2050
उल्क	21/06/2044	सिद्ध	12/06/2047	संक	11/09/2051
सिद्ध	11/11/2044	संक	11/02/2048	मंग	22/10/2051
संक	22/04/2045	मंग	12/03/2048	पिंग	11/01/2052
मंग	12/05/2045	पिंग	12/05/2048	धांय	12/05/2052

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
12/05/2052		12/05/2057		13/05/2063	
12/05/2057		13/05/2063		12/05/2070	
भद्रि	21/01/2053	उल्क	12/05/2058	सिद्ध	21/09/2064
उल्क	21/11/2053	सिद्ध	13/07/2059	संक	12/04/2066
सिद्ध	11/11/2054	संक	11/11/2060	मंग	22/06/2066
संक	22/12/2055	मंग	10/01/2061	पिंग	11/11/2066
मंग	11/02/2056	पिंग	12/05/2061	धांय	12/06/2067
पिंग	22/05/2056	धांय	11/11/2061	भ्राम	22/03/2068
धांय	21/10/2056	भ्राम	12/07/2062	भद्रि	12/03/2069
भ्राम	12/05/2057	भद्रि	13/05/2063	उल्क	12/05/2070

संकटा 6 वर्ष 2 मास 25 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
07/03/2035		06/03/2036		06/03/2038	
06/03/2036		06/03/2038		06/03/2041	
मंग	17/03/2035	पिंग	16/04/2036	धांय	06/06/2038
पिंग	06/04/2035	धांय	15/06/2036	भ्राम	06/10/2038
धांय	07/05/2035	भ्राम	05/09/2036	भद्रि	07/03/2039
भ्राम	16/06/2035	भद्रि	15/12/2036	उल्क	05/09/2039
भद्रि	06/08/2035	उल्क	16/04/2037	सिद्ध	05/04/2040
उल्क	06/10/2035	सिद्ध	05/09/2037	संक	05/12/2040
सिद्ध	16/12/2035	संक	14/02/2038	मंग	04/01/2041
संक	06/03/2036	मंग	06/03/2038	पिंग	06/03/2041

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
06/03/2041		06/03/2045		06/03/2050	
06/03/2045		06/03/2050		06/03/2056	
भ्राम	16/08/2041	भद्रि	15/11/2045	उल्क	07/03/2051
भद्रि	06/03/2042	उल्क	15/09/2046	सिद्ध	06/05/2052
उल्क	05/11/2042	सिद्ध	05/09/2047	संक	05/09/2053
सिद्ध	16/08/2043	संक	15/10/2048	मंग	05/11/2053
संक	06/07/2044	मंग	05/12/2048	पिंग	06/03/2054
मंग	15/08/2044	पिंग	16/03/2049	धांय	05/09/2054
पिंग	04/11/2044	धांय	16/08/2049	भ्राम	07/05/2055
धांय	06/03/2045	भ्राम	06/03/2050	भद्रि	06/03/2056

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
06/03/2056		07/03/2063		07/03/2071	
07/03/2063		07/03/2071		06/03/2072	
सिद्ध	16/07/2057	संक	15/12/2064	मंग	17/03/2071
संक	04/02/2059	मंग	06/03/2065	पिंग	06/04/2071
मंग	16/04/2059	पिंग	16/08/2065	धांय	07/05/2071
पिंग	05/09/2059	धांय	16/04/2066	भ्राम	16/06/2071
धांय	05/04/2060	भ्राम	07/03/2067	भद्रि	06/08/2071
भ्राम	14/01/2061	भद्रि	16/04/2068	उल्क	06/10/2071
भद्रि	05/01/2062	उल्क	16/08/2069	सिद्ध	16/12/2071
उल्क	07/03/2063	सिद्ध	07/03/2071	संक	06/03/2072

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

9	मूलांक	1
6	भाग्यांक	7
1, 3, 6, 9	मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
4, 5, 8	शत्रु अंक	3, 5, 6
27,36,45,54,63	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुक्र, शनि, बुध	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुक्र, शनि, बुध	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मकर, कुम्भ	मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मेष, कन्या, वृश्चिक	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
विष्णु	अनुकूल देवता	विष्णु
नीलम	शुभ रत्न	पुखराज
जमुनिया, बिलौर	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
पन्ना	भाग्य रत्न	माणिक्य
लौह	शुभ धातु	कांसा
काला	शुभ रंग	पीत
पश्चिम	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
संध्या	शुभ समय	संध्या
कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
उड़द	दान अन्न	दाल चना
तेल	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Pradeep

जीवन रत्नः	नीलम	कम खर्च, स्वास्थ्य, धन
भाग्य रत्नः	पन्ना	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति

Vishakha

जीवन रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	कम खर्च, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/07/1988-20/03/1990
साढेसाती प्रथम ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती तृतीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती प्रथम ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती तृतीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती प्रथम ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती तृतीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु व रोग
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती तृतीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती तृतीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती तृतीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/08/2076-03/01/2079

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Pradeep

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता हैऔर स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Vishakha

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.50		

कुल : **27.5 / 36**

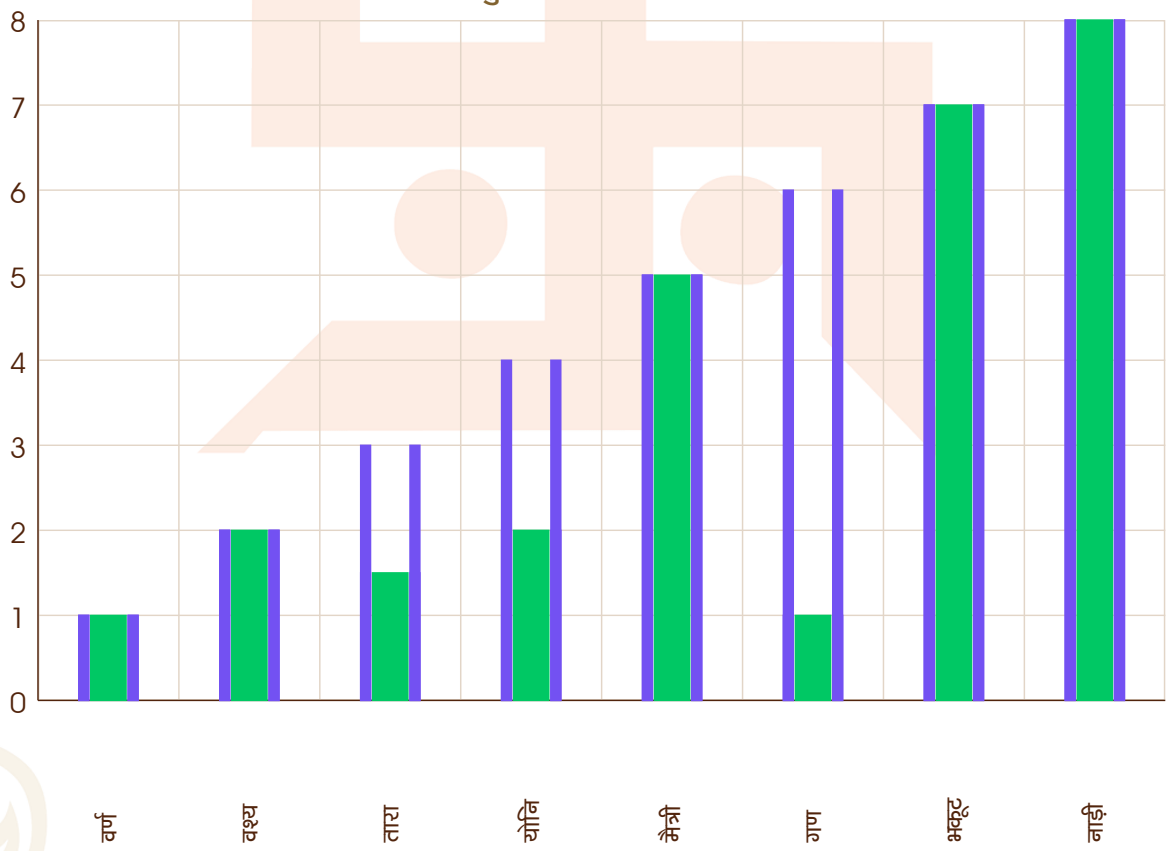

अष्टकूट मिलान

Pradeep का वर्ग गरूड़ है तथा Vishakha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Pradeep और Vishakha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Pradeep मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Vishakha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ष्;थ्ड्तमजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल Vishakha कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Pradeep कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Pradeep तथा Vishakha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Pradeep का वर्ण वैश्य है तथा Vishakha का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण Pradeep और Vishakha दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रूपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। Pradeep और Vishakha दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

वश्य

Pradeep का वश्य चतुष्पद है एवं Vishakha का वश्य भी चतुष्पद है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप Pradeep एवं Vishakha दोनों के स्वभाव, पसंद एक समान होंगे तथा आपसी तालमेल काफी अच्छा रहेगा, जिससे परिवार में सुख, शांति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता रहेगा। दोनों के बीच अत्यधिक प्रेम की भावना भी बनी रहेगी।

तारा

Pradeep की तारा मित्र तथा Vishakha की तारा विपत है। Vishakha की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान Pradeep एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि Vishakha का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

Pradeep की योनि मेष है तथा Vishakha की योनि सर्प है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन

की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Pradeep एवं Vishakha दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Pradeep एवं Vishakha दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

Pradeep का गण राक्षस तथा Vishakha का गण देव है। अर्थात Vishakha का गण Pradeep के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण Pradeep निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही Pradeep का Vishakha के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Vishakha हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

Pradeep एवं Vishakha दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान Pradeep एवं Vishakha तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

Pradeep की नाड़ी अन्त्य है तथा Vishakha की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं।

जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Pradeep और Vishakha का मिलान उत्तम रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर इनमें समानता रहेगी। Pradeep और Vishakha दोनों भूमितत्व राशि वृष राशि के है । अतः स्वाभाविक दृष्टिकोण तथा उनके जीवन के दर्शन में समानता रहेगी तथा आदर्शवाद भी उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही दोनों की प्रवृति शांत प्रिय रहेगी फलतः दाम्पत्य सुख शांति एवं समृद्धि से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Pradeep और Vishakha की राशि का स्वामी शुक्र है। अतः शुक्र के प्रभाव से दोनों आदर्श प्रेमी होंगे तथा संगीत के प्रति पूर्ण रूप से रूचिशील रहेंगे। आप दोनो संगीत के द्वारा जीवन में रोमांस आनंद एवं शांति की अनुभूति करेंगे तथा विवाद के समय संगीत द्वारा आपके मतभेद दूर होंगे।

Pradeep और Vishakha दोनों की राशि परस्पर प्रथम-प्रथम भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट होता है। इसके प्रभाव से Pradeep एक सहृदय व्यक्ति होंगे तथा सरलता का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। Vishakha की रूचि पाकशास्त्र के प्रति रहेगी तथा स्वादिष्ट व्यंजन बनाने में दक्ष रहेंगी फलतः दोनों के संबधों में परस्पर प्रगाढ़ता रहेगी। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे विवादों का आपसी समझ बूझ से हल करके अपना समय शांति पूर्वक व्यतीत करेंगे।

Pradeep और Vishakha दोनों का वश्य चतुष्पद है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक संबधों में भी समता रहेगी फलतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने में समर्थ होंगे जिससे आंतरिक प्रसन्नता भी बनी रहेगी।

Pradeep और Vishakha दोनों का वर्ण वैश्य है। अतः दोनों व्यापारिक बुद्धि से कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा धनार्जन में नित्य तत्पर रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा दाम्पत्य संबध मधुरता से पूर्ण रहेंगे।

धन

Pradeep और Vishakha दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Pradeep की नाड़ी अन्त्य तथा Vishakha की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से Pradeep का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगों का भी Pradeep पर प्रभाव रहेगा एवं संभोग किया में भी उन्हें शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषों में न्यूनता लाने के लिए Pradeep को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी Pradeep के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

संतान

संतति के दृष्टि से Pradeep एवं Vishakha का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनका उचित पालन पोषण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त इनकी पुत्र एवं कन्या संतति संख्या भी समान होगी।

यद्यपि Vishakha का प्रसव सामान्य विधि से सम्पन्न होगा परन्तु इसके प्रति Vishakha के मन में कई प्रकार से भय एवं चिन्ता की भावना रहेगी जिससे वे अनावश्यक मानसिक तनाव की अनुभूति करेंगी। अतः Vishakha को चाहिए कि ऐसे अनावश्यक भय एवं चिन्ता से मुक्त रहें तथा नियमित रूप से अपना गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण आदि करवाती रहें। इससे Vishakha सामान्य रूप से सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा ऐसे समय में स्वयं भी स्वस्थ तथा शांति की अनुभूति करेंगी। Pradeep और Vishakha बच्चों से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा वे भी अपने क्षेत्र में स्व योग्यता बुद्धिमता तथा व्यवहार कुशलता से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे माता पिता के प्रति उनके मन में समान भाव से आदर तथा आज्ञाकारिता रहेगी तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Pradeep और Vishakha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Vishakha तथा उसकी सास के परस्पर संबध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी समस्या इतनी गंभीर नहीं होगी जिनका कोई समाधान न हो। अतः यदि Vishakha धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक सामंजस्यशील प्रवृति का अनुसरण करें तो सास से संबधों में अनुकूलता आ सकती है। अतः अपनी ओर से उन्हें उनकी पूर्ण रूप से सेवा तथा सुख सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के साथ Vishakha के संबध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार सम्मान की भावना तथा सेवा की प्रवृति से उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आपस में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव

रहेगा।

इस प्रकार Vishakha का ससुराल में समय सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

Pradeep के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Pradeep के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण Pradeep के प्रति सामान्य ही रहेगा।

अंक ज्योतिष फल

Pradeep

आपका जन्म दिनांक नौ होने से आपका मूलांक नौ होता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी। रोजगार व्यवसाय मे एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे। स्वभाव में आपके तेजी रहेगी। फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी। आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

आपके स्वभाव में साहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी-कभी नुकसान भी उठायेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

मंगल के मूलांक के प्रभाववश आप अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होंगे। अतः आपको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहेगा।

Vishakha

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील महिला होंगी। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगी। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगी। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील महिला होंगी। इन गुणों वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगी। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगी। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगी। आप परोपकारवादी, बहुतों की पोषक बनेंगी। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगी। आप अपने कार्य करने के ढंग में

स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगी।

Pradeep

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

Vishakha

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है, अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकती हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचिपूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगी। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

Pradeep

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में मकर लग्न में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मकर लग्न के साथ-साथ कन्या राशि का नवमांश एवं कन्या राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादि संयोजनों से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप पर्याप्त साधन संग्रह करने के मामले में बहुत बड़े भाग्यशाली प्राणी हैं। परंतु आपके लिए यह निर्देश अत्यंत ग्राह्यनीय है कि आपकी मनोवृति यह हो सकता है कि शीघ्रतापूर्वक धनी बनने के लिए जूआ, सट्टा आदि खेल कर सफलता पूर्वक धनवान बन सकता हूं। परंतु उत्तम तो यह है कि आप अपनी इस मनोवृति को इस भावना के प्रति मोड़ दे। तथापि आप यदा-कदा लाटरी का टिकट खरीद कर कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी भी विषय को सुदृढ़तापूर्वक समझ जाते हैं। आप अपने लक्ष्य को निर्देश अुनसार प्रेरित होकर किसी भी कार्य कलाप के पीछे साहस पूर्वक दृढ़ संकल्पित होकर संलग्न हो जाते हैं। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप स्पष्ट रूप से विचार कर के अपनी कार्य योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं तथा किसी भी प्रकार की भूमिका की सफलता प्राप्ति हेतु छलांग लगाकर प्रयास नहीं करते हैं।

आप सपत्नीक किसी कार्य को विवेकपूर्वक करके अपने कार्य-कलाप की सफलता प्राप्ति हेतु सक्षम हैं। आप अपने जीवन के उत्तम समयावधि में सुमधुर समय पर सावधानी पूर्वक लाभांवित हो सकते हैं। जब आपकी आयु 15 वें वर्ष से 23 वर्ष के मध्य एवं 29 वें वर्ष तक की होगी। वह समय आपके लिए भाग्यशाली प्रमाणित होगा।

इन तीन वर्षो के अंतर्गत आप अपनी संतुष्टि हेतु किसी प्रकार का अनैतिक एवं दुःसाहसिक कार्य न करें। आप इस समय सहजता पूर्वक सुखी एवं संतुष्ट हो जाएंगे।

आप अपने लिए कार्य व्यवसायों में जनरलिस्ट एवं संचार मिडिया का कार्य धर्म एवं दर्शन के कार्य, पुलिस, प्रतिरक्षा की सेवा, खनिज व्यवसाय, चर्मोद्योग कृषि कार्य एवं सामान्य औद्योगिक प्रतिष्ठान की स्थापना आदि कार्यो में से अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य व्यवसाय का चयन कर सकते हैं।

आपमें विद्वेष एवं उच्चाकांक्षा रहती है, जो क्षणिक कार्यकलाप का घोतक है। आप आपने परिवार से अत्यधिक संबद्ध रहने वाले प्राणी हैं। आप अपनी पत्नी एवं बच्चों के प्रति श्रद्धावान होंगे।

उन लोगों की मनोवृत्ति आपसे अधिक आदान-प्रदान करने की रहती हैं, वे अधिक मात्रा में आपसे अपेक्षा करते हैं। इन बातों को आप महसूस करते हैं। सामान्यतः आप अपने पिता (अभिभावक) भाई एवं बहनों के प्रति बहुत स्नेहशील रहने वाले व्यक्ति होंगे।

आपको अपने जीवन में संगीत कला अर्थात् गायन-वादन से युक्त रहना एक अच्छा आनंददायक माहौल रहेगा। आपके बहुत मित्रगण होंगे, जो आपके साथ अपना आनंददायक समय व्यतीत करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु अधिक उम्र में ऐसे अवसर आ सकते हैं। जिस समय आपको हृदय संबंधी समस्याएं मूर्छा (बेहोशी) लगातार कफ-सर्दी, जुकाम आदि रोग से आक्रांत हो जाएं। अतः आप समय-समय पर चिकित्सक से जांच-पड़ताल कराते रहें।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग उत्तम है। परंतु आपके लिए क्रीम एवं पीला रंग अनुपयुक्त एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल एवं निर्भरात्मक अंक 6, 8 एवं 9 अंक लाभदायक प्रमाणित होगा। जबकि आपके लिए अंक 3 सर्वथा त्याज्य एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन शुभ दर्शनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य संपादन हेतु अनुकूल है। परंतु रविवार, सोमवार एवं गुरुवार का दिन आपके लिए अनुपयुक्त है।

Vishakha

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में धनु लग्नोदय काल में हुआ था। आपके जन्म लग्न के उदय के साथ-साथ तुला का नवमांश एवं सिंह राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपका यह जन्म लग्नादिक संयोजन आपके आदर्श जीवन की आधारशिला आनंदपूर्ण पराकाष्ठा का सृजन करता है, जो आपके जीवन के लिए सुखद एवं उन्नति कारक प्रतीत होता है। आप स्वाभाविक रूप से निष्कपट महिला है। परंतु जन सामान्य के मध्य "जैसे को तैसा" वाले सिद्धांत की अनुयायी हैं। आप विश्वसनीयता पूर्वक निश्चित जीवन व्यतीत करेंगी।

आप प्रायः सदैव ही अपने पक्ष की रूपरेखा तैयार करने में लगे रहती हैं। आप आकर्षक व्यक्तित्व एवं उत्तम स्वास्थ्य के संबंध में सौभाग्यशाली हैं। आप थोड़ी शिक्षा प्राप्त करके भी बैल की सींग जैसी पैनी कार्य क्षमता द्वारा अपनी सफलता हेतु कार्य संपादन करती रहेंगी। आपमें जन्मजात अंतर्ज्ञान एवं शक्ति विद्यमान है। आप अपनी कार्य योजना के कार्यान्वयन हेतु पूर्व ही सभी तथ्यों का अध्यापन कर हर दृष्टिकोण से तत्पर रहती हैं एवं अपनी कार्य योजना पूर्णरूपेन संपन्न करने में सक्षम हो जाती हैं।

आप किसी भी तरह दो प्रकार चाल की विशेषताओं से मुड़ने की प्रवृति रखती हो। पहली बात तो यह है कि आप जूआ के प्रलोभन में फंसकर संतुष्ट होना चाहती हो। परिणाम स्वरूप क्षति उठानी पड़ती है। दूसरी बात यह कि आप धारा प्रवाह बात चीत करती हो। इस कारण मानवीय स्वाभाविक विश्वसनीयता अन्य लोगों की दृष्टि में नष्ट हो जाती है। आप सदैव स्पष्ट रूप से किसी भी बात को जन सामान्य के मध्य प्रकट कर के अन्यों के द्वारा छेड़-खानी की शिकार बनती हो। आप सदैव अपनी पैनी तीक्ष्ण शाब्दिक उच्चारण करके अन्य लोगों की आत्मा पर चोट पहुंचाती हो। इस कारण आप जब कभी अपना मैत्री पूर्ण अधिकार जताना चाहती

हो तो तुम्हारे मित्र इस बातों का बहिष्कार करते हैं।

आप वैदेशिक लोगों के प्रति आकर्षित रहती हो। आप सदैव उनसे परिचय एवं संपर्क बढ़ाना चाहती हो एवं उनको अपनी दृष्टि में उच्चतम बनाकर अपना लेना चाहती हो। यदि आप सर्तकता पूर्वक वार्तालाप कर सम्पर्क में ले आएं तो यह संभाव्य है कि आप वैदेशिक भ्रमण कार्य पूरा कर सकती हैं।

आप निःसंदेह एक सुंदर भवन की स्वामी होंगे तथा अपनी प्यारी पत्नी एवं व्यवहार कुशल संतान से सुखी रह सकती हैं। परंतु आपमें बाहर भ्रमण करने की प्रवृति विद्यमान है क्योंकि आप खेल-कूद तथा भ्रमण कार्य में व्यस्त रहकर घर से बाहर रहती हैं। अस्तु आप घर-गृहस्थी के लिए सक्षम नहीं हैं।

आपके लिए कार्य व्यवसायों में अनुकूल एवं शानदार कार्य, कंपनी लॉ, वैदेशिक लोगों के साथ व्यापार संबंध स्थापित करना, शैक्षणिक कार्य, राजनीति कार्य एवं शैक्षणिक संबंधी कार्य एवं धार्मिक संस्थान के कार्य उत्तम हैं।

यदि आप निम्नांकित निर्देशों को ध्यान में रखकर कार्यों का प्रस्तुतीकरण करें तो बिना किसी भी व्यवधान के सफल हो जाओगी।

आपके लिए अंको में अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक सर्वथा अनुकरणीय है। परंतु अंक 2, 7 एवं 9 अंक अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में गुरुवार, एवं रविवार का दिन अनुकूल एवं शुभ फलदायक हैं, परंतु शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं समस्यापूर्ण रहेगा।

आपके लिए लाल, मोतिया एवं काले रंग को छोड़ कर शेष सफेद, क्रीम रंग, सूआपंखी रंग, नीला, हरा एवं नारंगी शुभ एवं अनुकूल हैं।

Pradeep

आप का जन्म कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, योनि मेष, नाडी अन्त्य, गण राक्षस तथा वर्ग गरूङ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का प्रथमाक्षर "उ" या "ऊ" से प्रारम्भ होगा। यथा- उमेश, उमाशंकर आदि।

सामान्य रूप से आप कंजूस प्रवृति के व्यक्ति होंगे। धन संग्रह में आप कुशलता का परिचय देंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही हिचकिचाहट का प्रदर्शन करेंगे। पापकर्मों या बुरे कर्मों में आप अधिक तल्लीन रहेंगे। आपके अधिकांश कार्यों से किसी को सुख की प्राप्ति नहीं होगी अपितु कष्ट ही पहुँचेगा। आप गहरी नींद में सोना पसन्द करेंगे फलस्वरूप आपके मन में कार्य या परिश्रम करने की इच्छा का अभाव रहेगा। अपने इसी आलस्य के कारण आपको यदा कदा भूख से भी व्याकुल होना पडेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अधिक मात्रा में भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। आप किसी की बात को सहने में असमर्थ रहेंगे तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध भी रहेंगे। तेज भी आपके चेहरे पर स्पष्ट रूप से रहेगा।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

विद्याध्ययन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसे प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। विद्या ही आपका धन होगा तथा इसी के प्रभाव से आप विद्वान कहलाएंगे तथा उच्चाधिकार प्राप्त पद की भी प्राप्ति कर सकेंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

जीवन में यदा कदा ही आप सत्य का अनुसरण करेंगे अन्यथा असत्य के मार्ग पर ही चलेंगे। इधर उधर बेकार घूमना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। वाणी भी आपकी कठोर होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। कृतघ्नता के अवगुण से भी आप युक्त रहेंगे अर्थात् आप अपने ऊपर किए गयें किसी के भी उपकार को नहीं मानेंगे। अपने कर्तव्यो का भी आप पूर्ण रूप से पालन नहीं करेंगे। अतः घर परिवार वाले अधिकांश असन्तुष्ट ही रहेंगे। धन भी पूर्ण रूप से स्थाई आपके पास नहीं रहेगा।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतघ्नः।

कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

Vishakha

आप मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि सर्प, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, गणदेव तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथम अक्षर वे या बे से प्रारम्भ होगा यथा- वेदवती।

स्वाभाविक रूप से आप चतुर एवं चंचलता से युक्त होगी। आपके समस्त कार्य चतुराई से सम्पन्न होंगे। धैर्य के गुण से आप युक्त रहेंगी तथा समस्त शुभ या अशुभ समय में धैर्य से काम लेंगी। इसके साथ ही यदा कदा आप अन्य जनों के प्रति उपेक्षा का भी प्रदर्शन कर सकती है।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

नकली वस्तुओं या प्रतिलिपि तैयार करने में आप कुशलता का प्रदर्शन करेंगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपने परिश्रम एवं बुद्धि द्वारा ही सम्पन्न करेंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

आप की प्रवृति प्रारम्भ से ही भयाक्रान्त भी रहेंगी। आप एक दक्ष तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। आप हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेंगी तथा धन ऐश्वर्य एवं वैभव के सुख का भी अभाव नहीं रहेगा।

चपलश्चतुरोभीरूः पटुरूत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

आप अस्त्र शस्त्र विद्या में निपुण हो सकती हैं तथा अधिकांश अस्त्र शस्त्रों के बारे में जानकारी रहेगी। आप विनयशील होंगी तथा सबसे नम्रतापूर्वक अपने को प्रस्तुत करेंगी। आप गुणों तथा गुणवानों के प्रति असीम श्रद्धा का भाव अपने मन में रखेंगी तथा उन्हें उचित सम्मान प्रदान करेंगी एवं उनसे विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगी। आप विलासी प्रवृति की होंगी तथा सम्पूर्ण प्रकार के भौतिक सुख साधनों एवं विलासी वस्तुओं से सम्पूर्ण रहेंगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग की विशेष प्रिय होंगी तथा हमेशा अच्छे मार्ग पर चलने के लिए यत्नशील रहेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।

हृदय से आप शान्त रहेंगी तथा भ्रमण या यात्रा करना आपको रूचिकर लगेगा। अतः आपका अधिकांश समय यात्रा तथा भ्रमण आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

Pradeep

आप वृष राशि में उत्पन्न हुए है। अतः आपका गौर वर्ण होगा तथा गाल अल्प रूप से स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का समावेश आपके स्वभाव में रहेगा। उत्तमकुल में उत्पन्न लोगों के आप सेवा करने वाले होंगे तथा इनके प्रति आपकी गहन श्रद्धा होगी। ब्राहमणों तथा गुरूओं का भी श्रद्धापूर्वक आदर तथा सम्मान करेंगे। आपकी प्रवृति वातकफ युक्त होगी तथा बुद्धि पूर्ण रूप से विकसित रहेगी। आप प्रायः सुखी तथा दानशीलता के भाव से युक्त रहेंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्वसुखों का उपभोग करने वाले होंगे। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। आप पूर्ण रूप से बुद्धि तथा बल से युक्त रहेंगे। धनागम प्रचुर मात्रा में होने से आप विलासी प्रकृति के हो जाएंगे तथा सभी भौतिक सुखों पर उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता आप पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। आपके सभी मित्र अच्छे आचरण तथा सद्गुणों से युक्त होंगे तथा मित्रता भी आपकी दीर्घकाल तक चलेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुखमंडल तथा जानुभाग दीर्घाकार होंगे। आपके जीवन के प्रथम दो भाग परिश्रम तथा कष्टपूर्वक व्यतीत होंगे तथा अन्तिम दो भाग सुखी तथा आनन्दपूर्वक व्यतीत होगे। स्त्री वर्ग से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति क्षमाशील होगी तथा सामान्य गलतियों और अपराधियों पर किसी को भी क्षमादान प्रदान करेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्ट सहना पड़ेगा तथा अत्यन्त कठोर परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, चेहरे या काख में तिल, मस्से या चोट का निशान हो सकता है।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपके पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक संख्या में होंगी तथा आपका आचरण तथा व्यवहार श्रेष्ठ रहेगा। आप आजीवन धन का उपभोग करेंगे तथा आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल से युक्त तथा घने काले घुंघराले बालों वाले होंगे। सैक्स के प्रति आप अधिक ही आर्कषित रहेंगे। आपका यश चारों तरफ फैलेगा। आपकी आखें बड़ी एवं मोटी होंगी। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होंगी तथा सही गलत का फैसला पुष्ट रहेंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्दगति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को दक्षता से पूर्ण करेंगे। आप अपने भरसक प्रयत्न से अन्यजनों की भलाई करने का भी प्रयास करेंगे। अच्छे तथा पुण्य के कार्य आप सदैव करते रहेंगे तथा इन्ही से हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमंडल की विशालाकृति होगी तथा आप सविलास गमनप्रिय प्रकृति के होंगे। कष्टों को आप सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से सम्पन्न होंगे। धन एवं ऐश्वर्य से आप जीवनपर्यन्त समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में भी आप लोकप्रिय रहेंगे। तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप सुन्दर स्वभाव वाले तथा विष्णु एवं शिव के आराधना करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी, अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशिस्थ चन्द्रमा यह समय अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तथा अमावस्या में कोई भी

शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि कोई भी शुभ कार्य न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर या शनिवार को शुभ कार्य में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए खराब समय चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि अथवा नौकरी में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, शहद इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Vishakha

आप वृष राशि में पैदा हुई हैं। अतः आपका वर्ण गौर लालिमा युक्त तथा गाल स्थूल होंगे। आपकी आँखे मोटी तथा बड़ी बड़ी होंगी। प्रकृति से भी आप थोड़ी आलसी होंगी। श्रेष्ठकुलोत्पन्न जनों के प्रति आपके मन में असीम सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। गुरू तथा ब्राहमणों को आप हृदय से सम्मान प्रदान करेंगी तथा उनके अनुदेशों के पालन हेतु सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप वात तथा कफ मिश्रित प्रवृति की होंगी। तथा प्रायः सुखी तथा बुद्धि से सम्पन्न रहेंगी। आपके बाल घुँघराले होंगे तथा दान शीलता की प्रवृति भी आप में रहेगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन पर्यन्त सर्व प्रकार के भौतिक सुखों का उपभोग करेंगी तथा अपनी दानी प्रवृति से समाज में प्रसिद्ध होंगी। शुद्धता या सफाई के प्रति आप अत्यधिक सावधान रहेंगी तथा हमेशा शुद्धता पूर्वक रहने के लिए प्रयत्न शील होंगी। आपके सारे कार्य कुशलता पूर्वक पूर्ण होंगे। बल का अभाव आपके पास नहीं रहेगा। आप पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगी। अतः प्रकृति आपकी विलासमय हो जाएगी। परिणाम स्वरूप आप भौतिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिए दिल खोलकर व्यय करेंगी। आप तेजस्वी होंगी। तथा चाल चलन श्रेष्ठ रहेगा। आपके समस्त मित्र अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपकी मुखाकृति एवं जानुभाग दीर्घाकार के होंगे। आप अपने जीवन के प्रथम दो

भागों में कष्टों का अनुभव करेंगी परन्तु दो भाग अत्यन्त सुख तथा आनन्द से व्यतीत करेंगी। क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा समयानुसार इनका उचित प्रर्दशन भी करेंगी। प्रारम्भ में आपको कष्ट उठाने पड़ सकते हैं तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपकी पीठ, मुख तथा बगल में मस्सा या व्रण आदि के चिन्ह भी होंगे।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति संख्या में आपकी कन्या संतति अधिक होगी। आपका उचित व्यवहार तथा उत्तम चाल चलन आपको समाज में सम्मान दिलाएगा। इस प्रकार सर्व प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुख का उपयोग करती हुई चारों तरफ कीर्ति प्राप्त करेंगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत होगा तथा बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आप दूध का दूध तथा पानी का पानी करने में अर्थात् शुद्धाशुद्ध में शीघ्र ही भेद करने वाली होंगी। आपके चलने की गति अत्यन्त ही मनमोहक होगी तथा शरीर एवं शरीर के अंग दीर्घ स्थूल एवं सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

शनैः शनैः चलना आपको अत्यन्त रूचिकर लगेगा। आपके अपने समस्त कार्य बुद्धिमता तथा चतुराई से पूर्ण होंगे। परोपकार की भावना भी आपके अर्न्तमन में निहित रहेगी तथा जीवन में समय समय पर इस भावना को पूर्ण करने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगी। इस प्रकार आप अपने सत्कार्यो तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख से व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपकी मुखाकृति दीर्घाकार होगी तथा सौन्दर्य आपका दर्शनीय होगा। जीवन में कष्ट सहने में आप सफलता प्राप्त करेंगी। तथा आपकी प्रवृति सविलास गमन प्रिय होगी। आप एक उच्चाधिकार प्राप्त महिला अधिकारी या गणमान्य महिला हो सकती हैं। आपके उदर में

जठराग्नि की प्रबलता व्याप्त रहेगी। आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाली महिला होंगी तथा भगवान विष्णु तथा शिव की अर्चना में अपनी रूचि रखेंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपके लिए मार्गशीर्षमास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियाँ, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय, लेन-देन आदि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि का चन्द्रमा भी शुभकार्यों में आपके लिए त्याज्य है। इस समय पर शरीर की सुरक्षा की भी चिन्ता करनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय खराब चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का आभास हो रहा हो, व्यापार नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के उपवास रखने चाहिए तथा साथ ही श्वेत मोती श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कपूर श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से कराने पर भी अशुभ फलों का नाश होगा तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शंकर या विष्णु की उपासना भी कर सकती हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

पाया विचार

Pradeep

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

Vishakha

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

Pradeep

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ है। अतः आप कभी कभी अधिक बातें बोलेंगे। हृदय में भी आपका दया का भाव अल्प रहेगा। आपको क्रोध अधिक आएगा तथा छोटी छोटी बातों पर आप उत्तेजित हो जाएंगे। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाएंगे। बल का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। लेकिन आप सबसे वाद विवाद करते रहेंगे। इससे अन्य लोग आपको अच्छा नही समझेंगे फलस्वरूप आपका अधिकांश लोगों से विरोध रहेगा। अतः संयमपूर्वक आपको अन्य जनों से वार्तालाप करना चाहिए जिससे किसी भी प्रकार से अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो सके।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही चेहरे की सुन्दरता भी मध्यम होगी। कभी कभी आप ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे कि सुनने वाले देखते ही रह जाएंगे। इसलिए अपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

Vishakha

आप देव गण में पैदा हुई हैं अतः आपकी वाणी श्रेष्ठ एवं कर्णप्रिय होगी। आप हमेशा सत्य वक्ता होंगी तथा जीवन में सत्य के पालन के लिए यत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी सरल बुद्धि होगी। सब कुछ सरलता से ग्रहण करना तथा सरलता पूर्वक अपने भावों को प्रकट करना आपकी प्रमुख विशेषता होगी। आपको अल्प एवं शाकाहारी भोजन बहुत प्रिय लगेगा। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा बताए गए सद्गुणों से आप युक्त होंगी। आप सर्व प्रकार से सुख सम्पन्न होंगी तथा किसी भी प्रकार का धनाभाव आपके पास नहीं रहेगा। समृद्धि हमेशा बनी रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आप देखने में अत्यन्त सुन्दर तथा स्वस्थ लगेंगी। दानी प्रवृति आपकी स्वभाव से ही रहेगी। अतः जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को अपने इस कृत्य से उपकृत करेंगी। आप सादगी पसन्द रहेंगी तथा दिखावटीपन से हमेशा दूर रहेंगी। समाज में आप एक विदुषी महिला

के रूप में भी जानी जाएंगी।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Pradeep

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप अत्यन्त उत्साही पुरूष होंगे जो कार्य करेंगे उसे उत्साह पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप योद्धा तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा कठिन से कठिन कार्य करने में समर्थ होंगे। धन ऐश्वर्य से आप आजीवन युक्त रहेंगे। नैसर्गिक रूप से परोपकार की भावना आपके मन में रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप उसे पूर्ण करेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

Vishakha

आप सर्पयोनि में पैदा हुई हैं। अतः कभी कभी आपके अन्दर क्रोध की मात्रा अत्यधिक हो जाएगी जिससे आपका अपने ऊपर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा। प्रवृति आपकी चंचल रहेगी तथा कार्यों को चपलता पूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। जिससे इच्छित परिणाम कभी ही प्राप्त होंगे। जिहवा भी आपकी चपल होगी तथा नाना प्रकार के स्वादों को खाने की इच्छा आपकी बनी रहेगी अर्थात् आप स्वाद लोलुप होंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

Pradeep

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

Vishakha

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

Pradeep

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

Vishakha

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

Pradeep

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

Vishakha

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी

उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

Pradeep

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

Vishakha

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

Pradeep

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

Vishakha

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

Pradeep

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

Vishakha

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

Pradeep

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

Vishakha

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

Pradeep

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

Vishakha

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

Pradeep

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

Vishakha

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Pradeep

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही

सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली महिला होंगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक अध्ययनशील महिला होंगी अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपके रूचि रहेगी तथा जीवन में निहित उददेश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगी। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रहेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगी तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगी। आर्थिक दृष्टि से भी आपके स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। पुत्र संतति से आप युक्त होंगी तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा

रहेगी। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विदुषी पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृति के महिला होंगी तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Pradeep

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्क्ष में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी

लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Pradeep

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आदर्श बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी होंगे। उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपको वे यथोचित सहयोग तथा सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। आप परस्पर एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे पारिवारिक शान्ति बनी रहेगी। मित्र एवं संबंधियों से भी सामान्यतया आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा उनसे अवसरानुकूल इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगी। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या हो तो आप दृढ़ता पूर्वक उसका सामना तथा समाधान करेंगी आप जो कहेंगी वहीं करेंगी भी यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता रहेगी। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप सिद्धान्त वादी महिला

होंगी तथा अपने सिद्धांतों पर हमेशा दृढ़ रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा फोन टेलीविजन तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा रिक्त समय में आप इनसे अपना मनोंरजन करेंगी । आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही अध्ययन एवं सूचना संबंधी लेखों के प्रति आपका आकर्षण रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तमशील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए भाग्यशाली महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Pradeep

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करेने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सर्मत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

Vishakha

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगी एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध महिला से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती हैं। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करेने में समर्थ होंगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते है। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से सफलताएं प्राप्त करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उतीर्ण करेंगी इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Pradeep

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तथा शुक्र भी स्वग्रही होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्य-कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलताएं प्राप्त करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी रूचि होगी तथा इनके ज्ञानार्जन में प्रवृत होंगे परन्तु आधुनिक साहित्य, कविता, कला या कानून आदि में भी आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके नवीन सिद्धांत प्रतिपारित प्रभुत्व करने में समर्थ होंगे। जिससे आप समाज में आदरणीय स्तर प्राप्त करेंगे।

पंचमभाव में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आप काफी रूचिशील होंगे तथा ऐसे सम्बन्धों में आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी तथा भावनात्मक आकर्षण बना रहेगा लेकिन प्रेम-प्रसंगों में आपको मर्यादा एवं नैतिकता का पालन करना चाहिए। इससे आप अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित होंगे तथा समाजिक सम्मान भी बना रहेगा।

संतति भाव में स्वग्रही शुक्र की स्थिति से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी। तथा कन्या संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, व्यक्तित्व एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को उन्हीं की सलाह एवं सहयोग से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर सदभाव, विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों के मन में पूर्ण विशिष्ट लगाव होगा तथा उन्हीं के सहयोग से अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करेंगे लेकिन आदर भाव दोनों के प्रति बराबर होगा। इसके अतिरिक्त आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा बच्चे वृद्धावस्था में तन-मन-धन से आपकी सेवा करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति प्रतिभाशाली एवं योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही इच्छित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। फलतः वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त अपने उत्तम कार्य कलापों एवं व्यवहार कुशलता से अन्य जनों को प्रभावित एवं प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा सभी लोग उन्हें यथोचित स्नेह तथा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगी। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रूचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगी। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सदभावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोंनो का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेगी जिससे उनका भविष्य उज्जवल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगी। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चों को वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Pradeep

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

Vishakha

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपनी ही इच्छा से कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व प्रदान नहीं करेंगी। आपका उच्च स्तर, कार्यप्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली शत्रु वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगा। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी कई बार विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगी तथा इनमें मुक्त भाव से व्यय करेंगी जिससे आपको उचित सफलता प्राप्त हो

सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा साम, दाम, दण्ड, भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है अच्छी तरह जानती है। अतः अपनी इस कार्य प्रणाली से शत्रु, विरोधी तथा मुकद्दमे आदि में विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

आपको नौकर चाकरों की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी क्योंकि आप एक व्यस्त महिला होगी तथा अपने दैनिक कार्यों को स्वयं सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगी अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक रहेगी लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे अतः इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते है अतः सेवकों के चुनाव में सावधानी रखें।

आपके पास आराम दायक जीवन बिताने के लिए प्रचुर मात्रा में धन होगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। जिससे ऋण आदि लेने की स्थिति बनेगी। आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसन्द करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प ही प्रदान करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी असन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन अत्यवश्यक समय पर वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते है। साथ ही उत्तम स्वास्थय के लिए आपको खान पान का ध्यान रखना चाहिए तथा अनावश्यक अनियमिताएं नहीं होनी चाहिए अन्यथा प्रौढ़ावस्था में आप शारीरिक अस्वस्थता से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Pradeep

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है। वह सौम्य तथा कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं शांत स्वभाव की होंगी। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। तथा अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्यो से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगी उनकी प्रवृति स्वाभिमानी होगी। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट रहेंगे जिससे सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रुझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रुचि रहेगी।

सप्तम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप प्रेम विवाह भी कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सलाह से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर विश्वास प्रेम एवं आकर्षण का भाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ होगी। प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रश्स्त रहेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी

बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृति का व्यक्ति होता है। साथ ही वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगे। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रूचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृति की भी व्यक्ति होंगे जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। अतः व्यायाम आदि की उन्हें सलाह देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Pradeep

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपमें आध्यात्म संबन्धी शक्ति जन्म से ही विद्यमान रहेगी तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपमें अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की भी प्रबलता रहेगी फलतः आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी। यदि आपको कोई मानसिक या अन्य परेशानी उत्पन्न होगी तो आप सामान्यतया इन्हीं विद्याओं के द्वारा उसके निराकरण के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

आपको निश्चित रूप से पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आपका जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप की चल एवं अचल सम्पत्ति में वृद्धि भी हो सकती है तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से लाभ की पूर्ण संभावना रहेगी। आपका विवाह एक कुलीन परिवार में होगा तथा वे धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे जिससे आपके दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। किसी भी मूल्यवान वस्तु या स्वयं का बीमा कराने में आप शीघ्रता का परिचय देंगी क्योंकि आप किसी भी वस्तु की सर्वप्रथम सुरक्षा का उपाय ढूंढती

है तथा अनावश्यक हानि की संभावना को पहले ही समाप्त करना चाहती हैं । जीवन में चोरी डकैती या दुर्घटनाओं आदि की न्यूनता रहेगी तथापि यदि कोई ऐसी घटना घटित भी होती है तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करके आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Pradeep

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Vishakha

आपके जन्म समय में नवम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक गुरूओं या श्रेष्ठ जनों का मन से आदर करेंगी। साथ ही उनके अनुसरण करने के लिए उद्यत हो सकती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपका प्रचुर मात्रा में ज्ञान रहेगा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करेंगी लेकिन मुख्य रूप से अपने धर्म के तीर्थ स्थानों पर जाना ही विशेष पसन्द करेंगी। आपकी ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी श्रद्धा रहेगी एवं इनका न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। ध्यान एवं योग संबंधी क्रियाओं को भी आप समय समय पर करती रहेंगी। आध्यात्म के द्वारा आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की वृद्धि होगी फलतः आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध हो सकती हैं।

आप एक सामाजिक प्राणी होंगी तथा स्वछन्दता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना रूचिकर लगेगा। साथ ही किसी के नियंत्रण में कार्य करना पसन्द नहीं करेंगी। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती है इनमें आपको लाभ, ज्ञान एवं सम्मान प्राप्ति की संभावना रहेगी। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा वे आपकी पूर्ण सेवा करेंगे। वास्तव में आप वर्तमान समय में जो भी सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग कर रहीं है यह सब आपके पूर्व जन्मों का फल है अतः सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक ही जीवन व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Pradeep

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व युक्त राशि है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्जवल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कींमती मदिरा, इलैक्ट्रोनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते है एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही बृहस्पति भी लग्नेश होकर दशमभाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वीतत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इसमें स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही सामयिक परिवर्तनों से भी आप लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी।

बृहस्पति की दशमभाव में कन्या राशि में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक, व्याख्याता, अनुष्ठान कर्ता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायाधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभागों में सचिव, सलाहकार, प्रशासनिक क्षेत्र, ज्यौतिषी एवं राजनीति उत्तम एवं अनुकूल रहेगी। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी तथा इनमें अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य को प्रारंभ करना चाहिए। व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातुकार्य, शेयर क्रय विक्रय, वित्तीय संस्था का स्वामित्व, ब्याज द्वारा, स्वतंत्र कार्य यथा ज्यौतिष, वकालत आदि से वांछित उन्नति एवं लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही प्राइवेट कम्पनी के व्यवस्थापक के रूप में भी आपको उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। अतः व्यापार के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं कार्यो को ही सम्पन्न करें।

दशमभावस्थ बृहस्पति के शुभ प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी एवं यश तथा प्रतिष्ठा भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। साथ ही आप किसी समाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्था के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य होंगी जिससे आपको अतिरिक्त मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। अतः अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान एवं आदर्श व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक के रूप में देखना चाहेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका मुख्य योगदान होगा जिससे आप सुगमता पूर्वक उन्नति करने में समर्थ होंगी। आप भी अपने परिश्रम एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Pradeep

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्याय प्रिय महिला होंगी तथा अपने इन्ही गुणों के साथ साथ पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में अपनी महत्वाकांक्षाओं, इच्छाओं तथा संकल्पों को पूरा करेंगी। धन वैभव एवं सुख साधनों से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा जीवन में माता सास या अन्य सहेली के सहयोग से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके साथ ही विलासमय आभूषणों के विक्रय, इलक्ट्रोनिक्स के उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपका धनार्जन हो सकता है। यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं हैं तो आपके पति उपरोक्त विभागों या कार्य से धन अर्जित करेंगे। इस प्रकार आय स्त्रोतों में वृद्धि करके आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगी ।

आपको जीवन में बड़ी बहिनों से सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा प्रत्येक क्षेत्र में वे स्नेह तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी एवं मार्गदर्शन भी करेंगी। साथ

ही आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगी। आप मित्रता प्रिय महिला होंगी तथा मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। इनके मध्य आप आदरणीया रहेंगी तथा सभी आपसे प्रभावित रहेंगे। आपको एकान्त अच्छा नहीं लगेगा तथा कोई न कोई हमेशा साथ में रहेगा। समाज से आपको इच्छित सम्मान प्राप्त होगा एवं अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करना भी अपना कर्तव्य समझेंगी जिससे जीवन में सामाजिक रूप से विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना रहेगी। इस प्रकार आप सुखऐश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना पारिवारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Pradeep

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

Vishakha

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप एक भौतिक वादी महिला होंगी तथा धनार्जन के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी। आप अन्य जनों की भलाई के कार्यो को तन मन धन से करने के लिए भी तत्पर रहेंगी अतः समय समय पर आपको अधिक धन की आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपकी इच्छा धनऐश्वर्य से युक्त होने की हमेशा रहेगी साथ ही आर्थिक सुरक्षा के प्रति भी सतर्क रहेंगी तथा इस कार्य में आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यय मुख्य रूप से दया, दान, मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर होगा। जब भी आपको इसका अवसर मिलेगा आप अवश्य कुछ न कुछ इन पर व्यय करेंगी। साथ ही भौतिक एवं विलासमय आधुनिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी लेकिन कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृति को देखते हुए लोग अकारण ही आपसे धन की मांग कर सकते है।

आपको दूर समीप की यात्राएं प्रिय कर लगेंगी। साथ ही युवावस्था में आप

साहसिक कार्यो को भी सम्पन्न करेंगी तथा किसी नवीन सिद्धांन्त का भी प्रतिपादन कर सकती है। देश की यात्राओं के साथ साथ आपकी विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बाई आंख में किसी प्रकार की कष्टानुभूति कर सकती है लेकिन सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

दशा विश्लेषण

Pradeep

महादशा :- राहु
(12/05/2008 - 12/05/2026)

राहु की महादशा 12/05/2008 को आरम्भ और 12/05/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रैवेल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन,

समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अंतरदशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरु होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

Vishakha

महादशा :- गुरु
(25/05/2016 - 25/05/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 25/05/2016 को आरम्भ और 25/05/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप ज्ञान की खोज को जारी रखेंगे और आपकी रुचि साहित्य और पुराणों के अध्ययन की ओर होगी।

दशा विश्लेषण

Pradeep

महादशा :- गुरु
(12/05/2026 - 12/05/2042)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 12/05/2026 को आरम्भ तथा 12/05/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद-प्रमोद, रोमांस, वर्ग-पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम-संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पांचवे भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ-साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई-नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

दोनों त्रिकोणों से सम्बद्ध तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की दृष्टि 9वें और पहले भाव (त्रिकोण तथा केन्द्र) पर होने के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे।

Vishakha

महादशा :- शनि
(25/05/2032 - 26/05/2051)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 25/05/2032 को आरम्भ और 26/05/2051 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है।

शनि आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है और लोग बहुधा इससे डरते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में यह विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न करता है। फल प्राप्ति की दिशा में जातक को कठिन परिश्रम के लिये प्रेरित कर यह उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि चौथे, आठवें और ग्यारहवें भाव पर है और इन भावों के कारकत्व पर इसका प्रभाव है। द्वितीय भाव, जिसमें यह स्थित है, सम्पत्ति, लाभ, सांसारिक सुख, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जिह्वा, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

द्वितीय भाव, जो पारिवारिक सदस्यों का भाव है, में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य की कोई गम्भीर समस्या अथवा दुर्घटना नहीं होगी और आप प्रसन्न रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

द्वितीय भाव स्थित शनि अपने भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपके संसाधनों और चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सम्पत्ति का लाभ उठांएगे और अनीति का सहारा भी लेंगे।

व्यवसाय :

आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, सम्पत्ति तथा साहस के स्वामी शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के कारण व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ होंगे। सम्पत्ति का भाव आपको पर्याप्त धन और धनोपार्जन के स्रोत प्रदान करेगा। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आप की पदोन्नति के अनेक मार्ग खुलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो अनेक नये उद्यम आपके मस्तिष्क में उभरेंगे और आप पर्याप्त धन अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

यह दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। आपके पारिवारिक जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आपको पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा

क्योंकि आपका दूसरी स्त्रियों की ओर झुकाव है और आप दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति में विकास के लिए यह दशा अनुकूल नहीं है।

Pradeep

महादशा :- शनि
(12/05/2042 - 12/05/2061)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 12/05/2042 को आरम्भ और 12/05/2061 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बायीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

Vishakha

महादशा :- बुध
(26/05/2051 - 25/05/2068)

बुध की महादशा 26/05/2051 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 25/05/2068 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्म कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2018

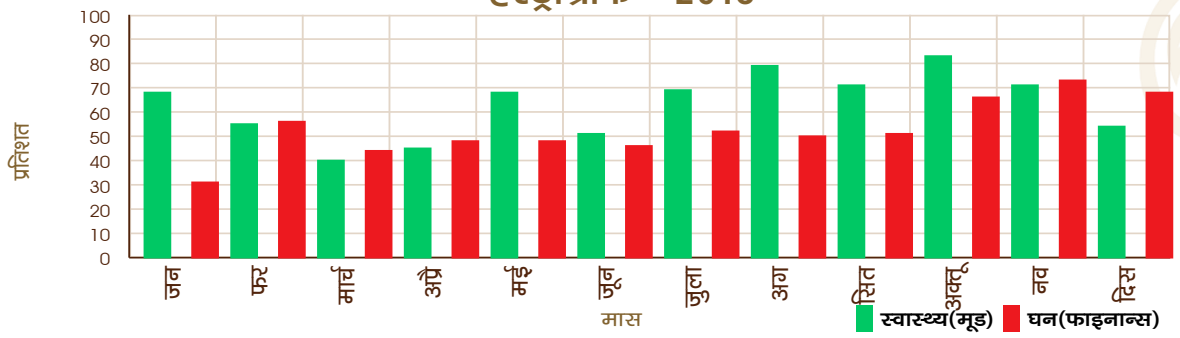

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2018

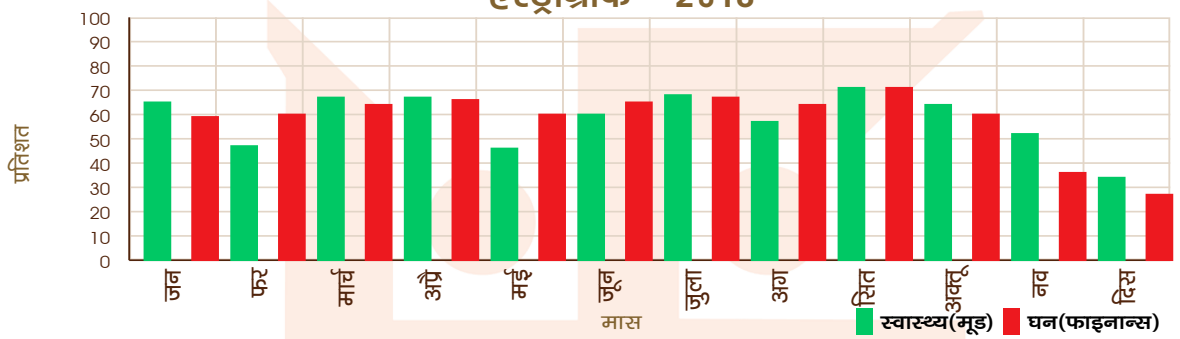

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2019

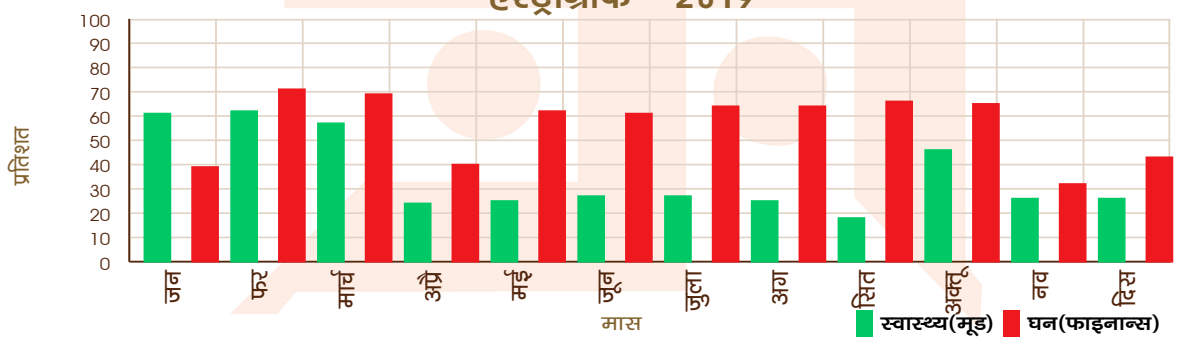

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2019

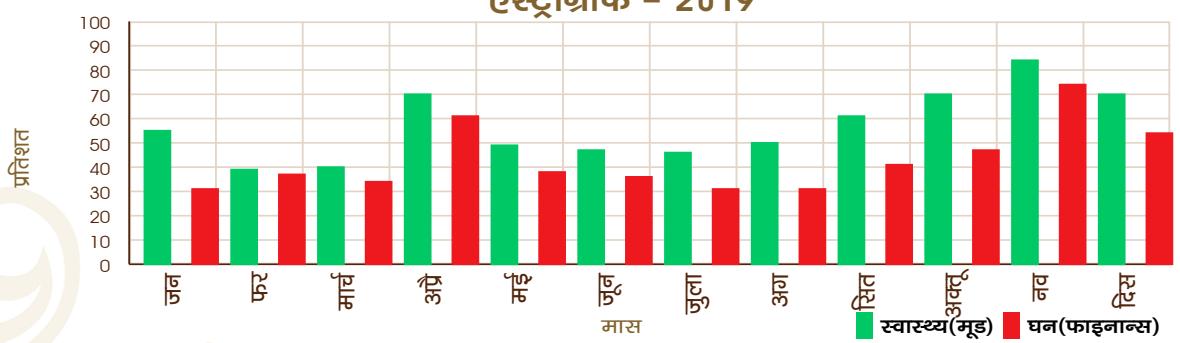

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2020

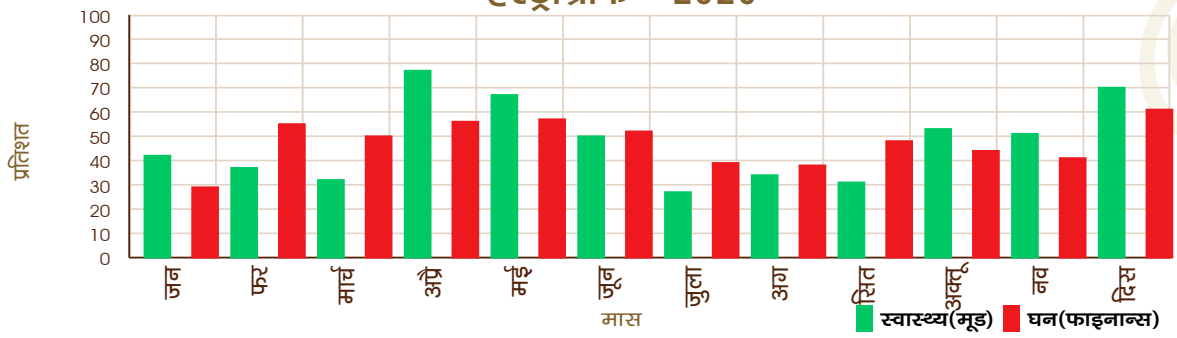

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2020

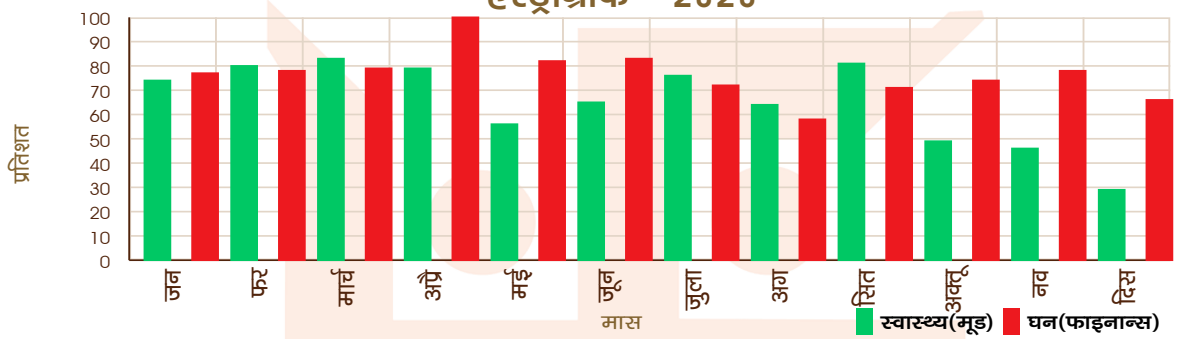

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2021

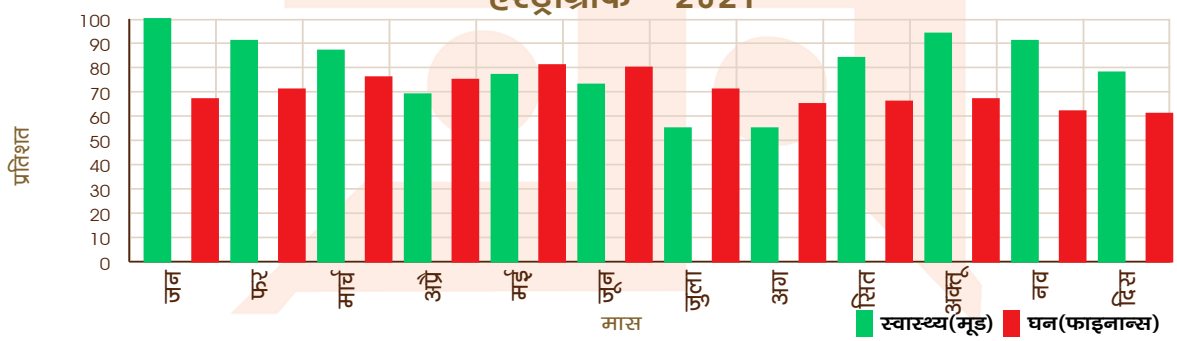

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2021

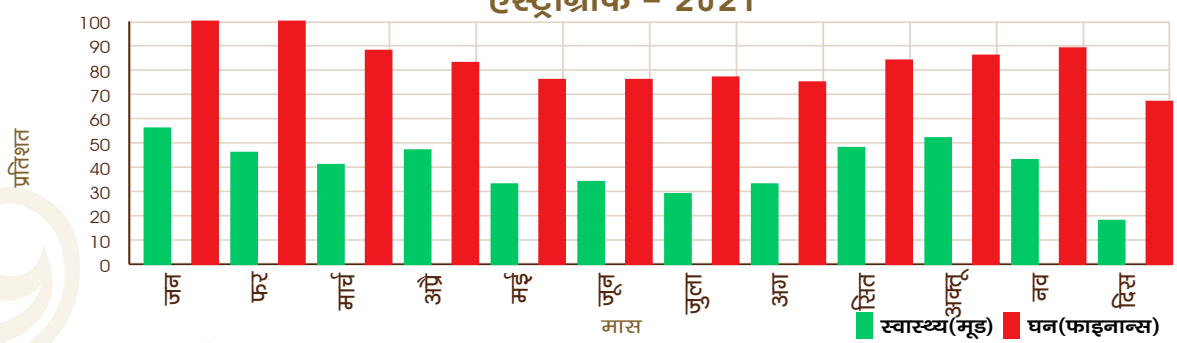

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2022

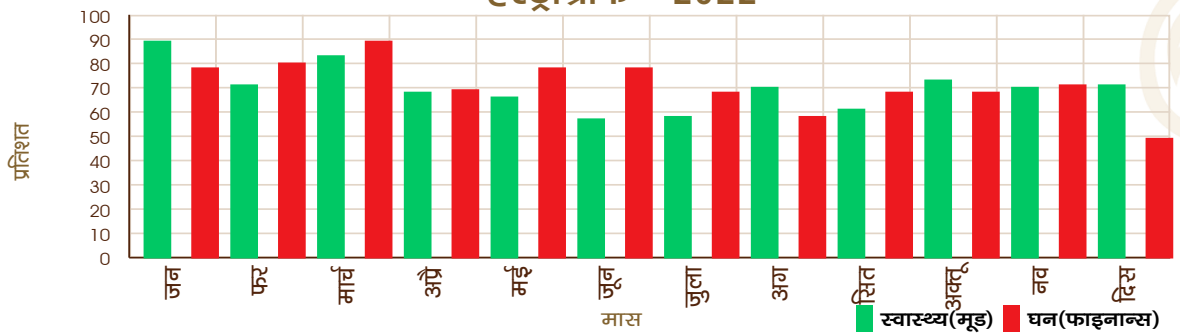

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2022

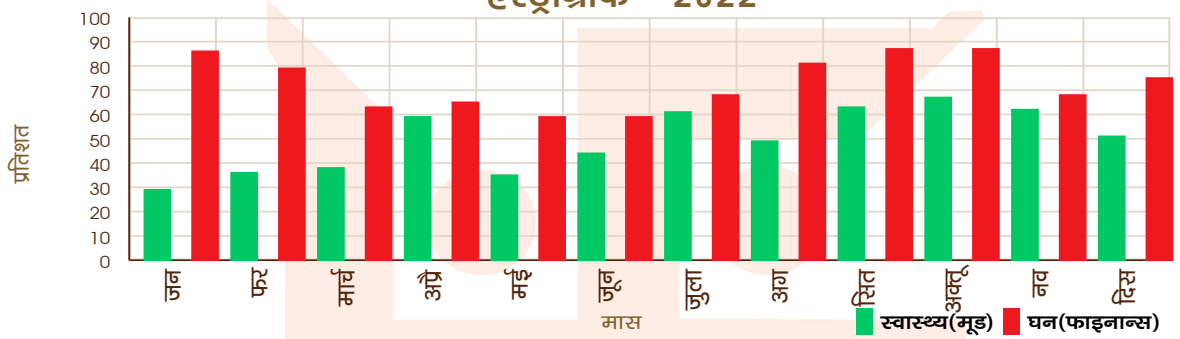

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2023

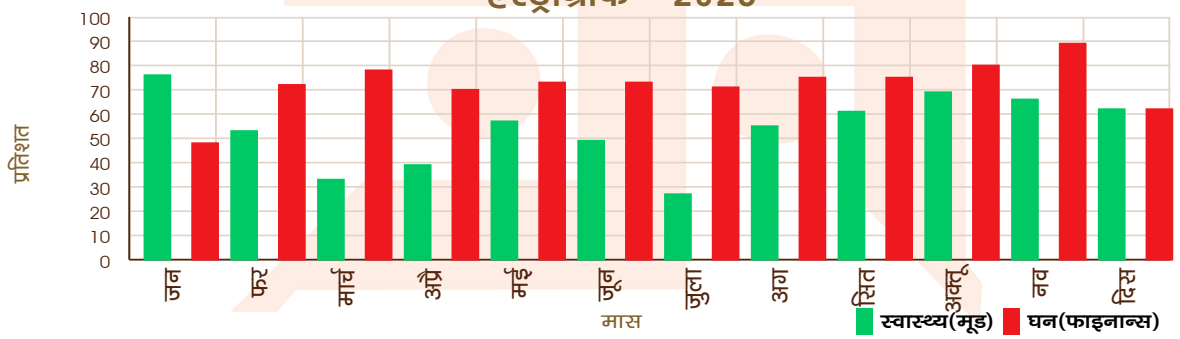

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2023

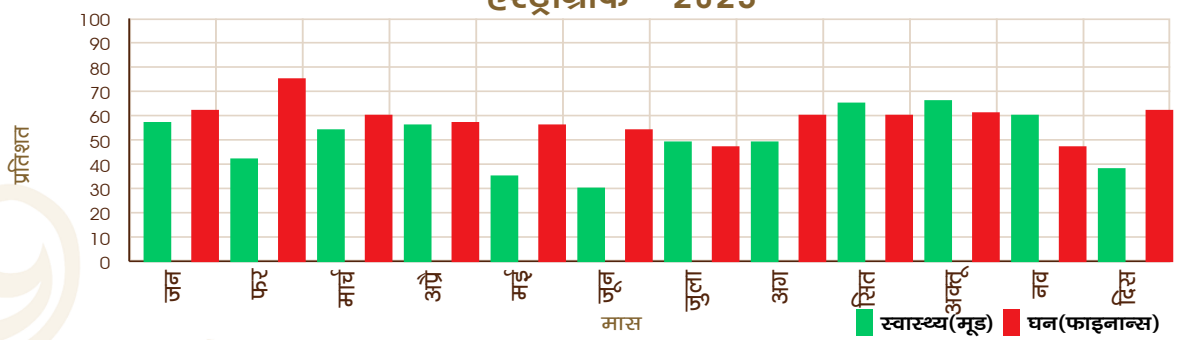

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2024

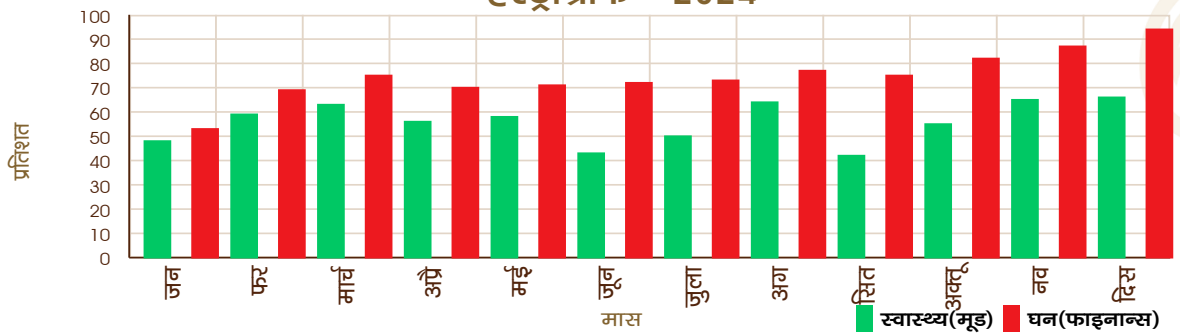

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2024

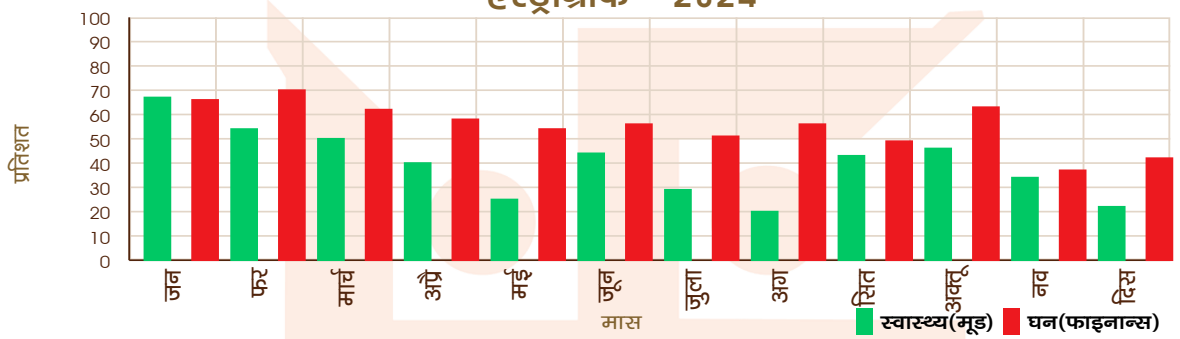

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2025

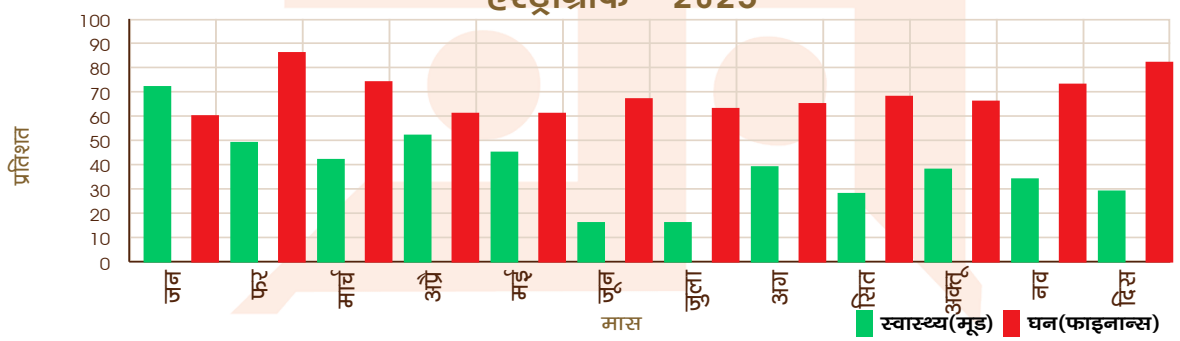

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2025

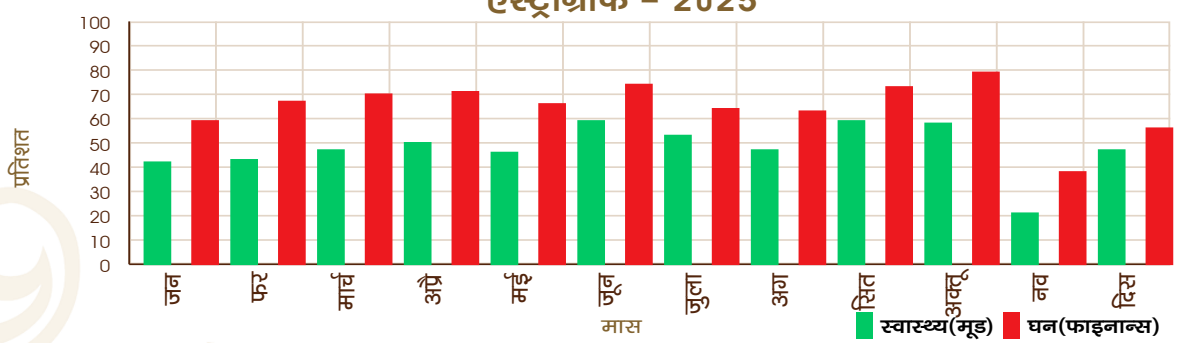

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2026

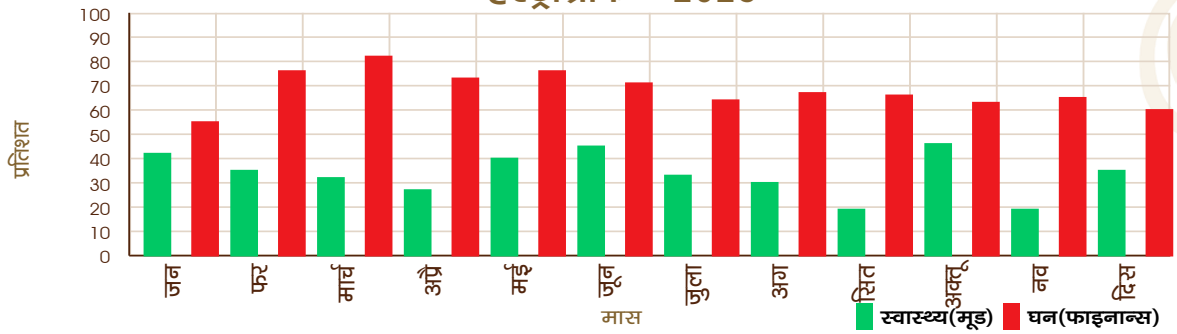

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2026

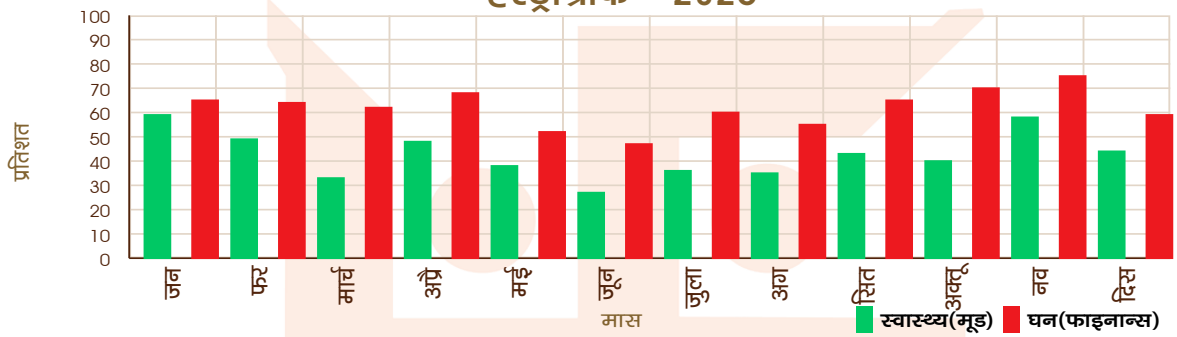

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2027

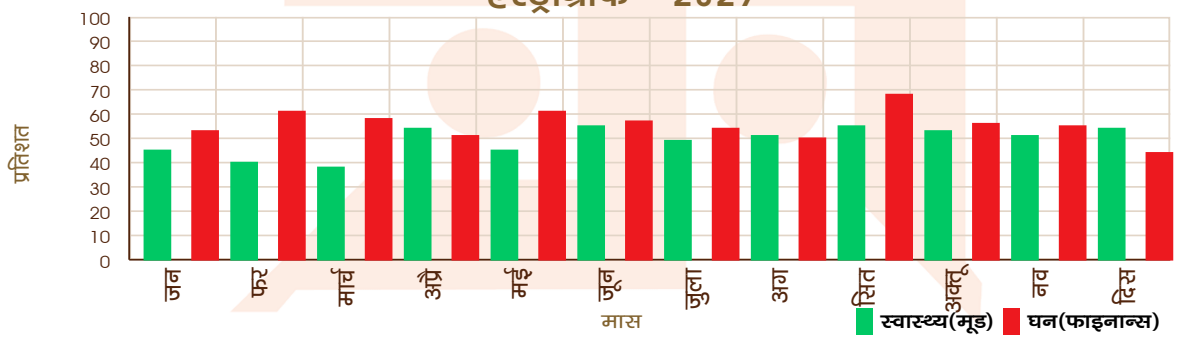

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2027

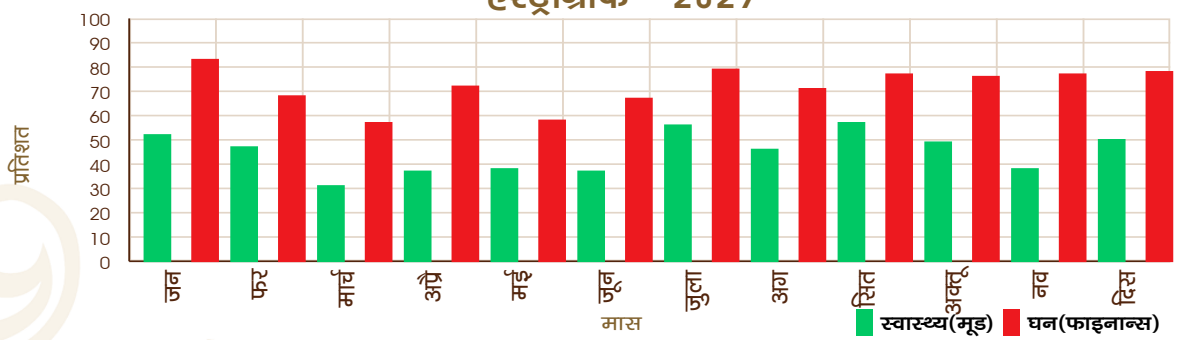

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2028

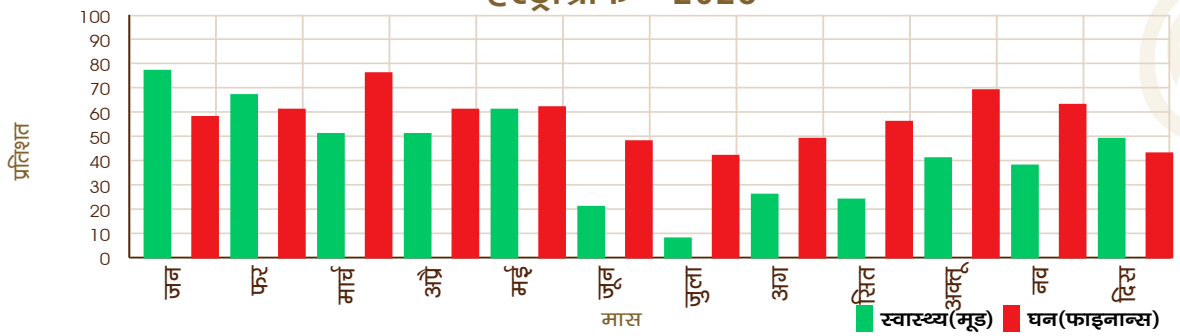

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2028

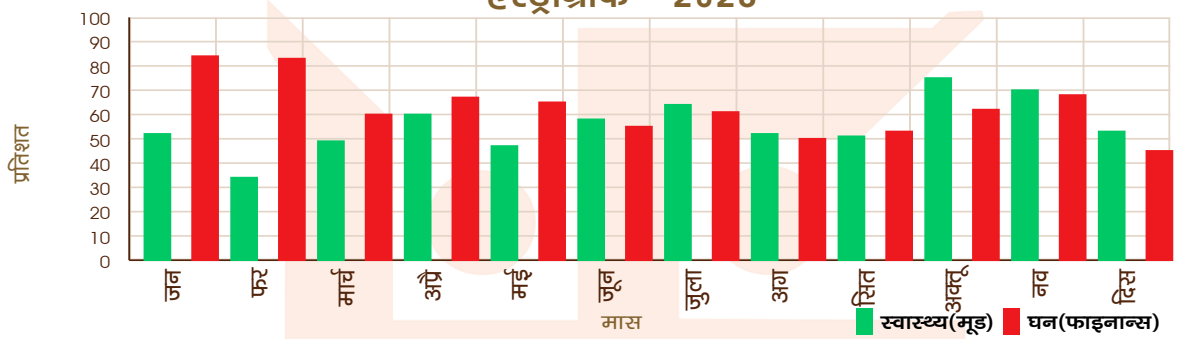

Pradeep
एस्ट्रोग्राफ – 2029

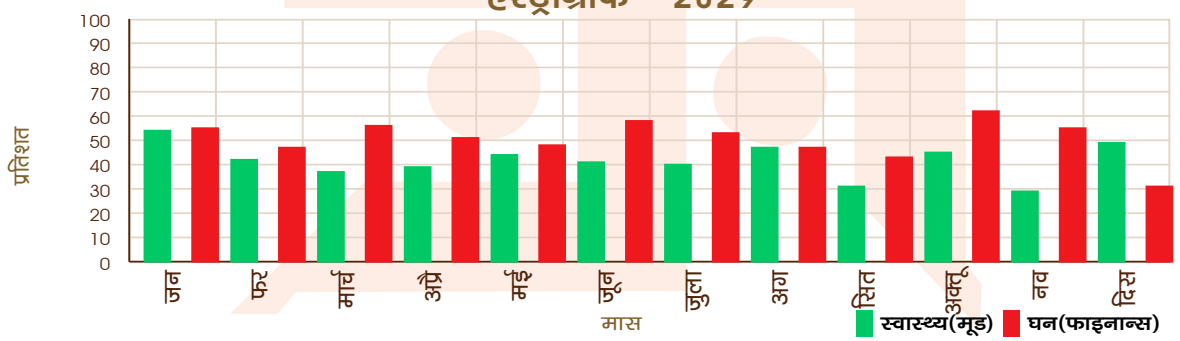

Vishakha
एस्ट्रोग्राफ – 2029